श्री अंतकृद्दशांग सूत्र

।। श्री आगम-गुण-मञ्जूषा ।।

।। શ્રી આગમ-ગુણ-મંજૂષા ।।

।। Sri Agama Guna Manjusa ।।

(સચિત્ર)

प्रेरक-संपादक

अचलगच्छाधिपति प.पू.आ.भ.स्व. श्री गुणसागर सूरीश्वरजी म.सा.

४५ आगमो का संक्षिप्त परिचय

११ अंगसूत्र

१) **श्री आचारांग सूत्र :-** इस सूत्र मे साधु और श्रावक के उत्तम आचारो का सुंदर वर्णन है। इनके दो श्रुतस्कंध और कुल २५ अध्ययन है। द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, धर्मकथानुयोग और चरणकरणानुयोगोमे से मुख्य चौथा अनुयोग है। उपलब्ध श्लोको कि संख्या २५०० एवं दो चुलिका विद्यमान है।

२) **श्री सूत्रकृतांग सूत्र :-** श्री सुयगडांग नाम से भी प्रसिद्ध इस सूत्र मे दो श्रुतस्कंध और २३ अध्ययन के साथ कुलमिला के २००० श्लोक वर्तमान मे विद्यमान है। १८० क्रियावादी, ८४ अक्रियावादी, ६७ अज्ञानवादी अपरंच द्रव्यानुयोग इस आगम का मुख्य विषय रहा है।

३) **श्री स्थानांग सूत्र :-** इस सूत्र ने मुख्य गणितानुयोग से लेकर चारो अनुयोंगो कि बाते आती है। एक अंक से लेकर दस अंको तक मे कितनी वस्तुअें है इनका रोचक वर्णन है, ऐसे देखा जाय तो यह आगम की शैली विशिष्ट है और लगभग ७६०० श्लोक है।

४) **श्री समवायांग सूत्र :-** यह सूत्र भी ठाणांगसूत्र की भांति कराता है। यह भी संग्रहग्रंथ है। एक से सो तक कौन कौन सी चीजे है उनका उल्लेख है। सो के बाद देढसो, दोसो, तीनसो, चारसो, पांचसो और दोहजार से लेकर कोटाकोटी तक कौनसे कौनसे पदार्थ है उनका वर्णन है। यह आगमग्रंथ लगभग १६०० श्लोक प्रमाण मे उपलब्ध है।

५) **श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र (भगवती सूत्र) :-** यह सबसे बडा सूत्र है, इसमे ४२ शतक है, इनमे भी उपविभाग है, १९२५ उद्देश है। इस आगमग्रंथ मे प्रभु महावीर के प्रथम शिष्य श्री गौतमस्वामी गणधरादि ने पुछे हुए प्रश्नो का प्रभु वीर ने समाधान किया है। प्रश्नोत्तर संकलन से इस ग्रंथ की रचना हुइ है। चारो अनुयोगो कि बाते अलग अलग शतको मे वर्णित है। अगर संक्षेप मे कहना हो तो श्री भगवतीसूत्र रत्नो का खजाना है। यह आगम १५००० से भी अधिक संकलित श्लोको मे उपलब्ध है।

६) **ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र :-** यह सूत्र धर्मकथानुयोग से है। पहले इसमे साडेतीन करोड कथाअे थी अब ६००० श्लोको मे उन्नीस कथाअें उपलब्ध है।

७) **श्री उपासकदशांग सूत्र :-** इसमें बाराह व्रतो का वर्णन आता है और १० महाश्रावको के जीवन चरित्र है, धर्मकथानुंयोग के साथ चरणकरणानुयोग भी इस सूत्र मे सामील है। इसमे ८०० से ज्यादा श्लोक है।

८) **श्री अन्तकृद्दशांग सूत्र :-** यह मुख्यत: धर्मकथानुयोग मे रचित है। इस सूत्र में श्री शत्रुंजयतीर्थ के उपर अनशन की आराधना करके मोक्ष मे जानेवाले उत्तम जीवो के छोटे छोटे चरित्र दिए हुए है। फिलाल ८०० श्लोको मे ही ग्रंथ की समाप्ति हो जाती है।

९) **श्री अनुत्तरोपपातिक दशांग सूत्र :-** अंत समय मे चारित्र की आराधना करके अनुत्तर विमानवासी देव बनकर दूसरे भव मे फीर से चारित्र लेकर मुक्तिपद को प्राप्त करने वाले महान् श्रावको के जीवनचरित्र है इसलीए मुख्यतया धर्मकथानुयोगवाला यह ग्रंथ २०० श्लोक प्रमाणका है।

१०) **श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र :-** इस सूत्र मे मुख्यविषय चरणकरणानुयोग है। इस आगम में देव-विद्याधर-साधु-साध्वी श्रावकादि ने पुछे हुए प्रश्नों का उत्तर प्रभु ने कैसे दिया इसका वर्णन है। जो नंदिसूत्र मे आश्रव-संवरद्वार है ठीक उसी तरह का वर्णन इस सूत्र मे भी है। कुलमिला के इसके २०० श्लोक है।

११) **श्री विपाक सूत्र :-** इस अंग मे २ श्रुतस्कंध है पहला दु:खविपाक और दूसरा सुखविपाक, पहेले में १० पापीओं के और दूसरे में १० धर्मीओ के द्रष्टांत है मुख्यतया धर्मकथानुयोग रहा है। १२०० श्लोक प्रमाण का यह अंगसूत्र है।

१२ उपांग सूत्र

१) **श्री औपपातिक सूत्र :-** यह आगम आचारांग सूत्र का उपांग है। इस मे चंपानगरी का वर्णन १२ प्रकार के तपों का विस्तार कोणिक का जुलुस अम्बडपरिव्राजक के ७०० शिष्यो की बाते है। १५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

२) **श्री राजप्रश्नीय सूत्र :-** यह आगम सुयगडांगसूत्र का उपांग है। इसमें प्रदेशीराजा का अधिकार सूर्याभदेव के जरीए जिनप्रतिमाओं की पूजा का वर्णन है। २००० श्लोको से भी अधिक प्रमाण का ग्रंथ है।

३) **श्री जीवाजीवाभिगम सूत्र :-** यह ठाणांगसूत्र का उपांग है। जीव और अजीव के बारे मे अच्छा विश्लेषण किया है। इसके अलावा जम्बुद्विप की जगती एवं विजयदेव ने कि हुइ पूजा की विधि सविस्तर बताइ है। फिलाल जिज्ञासु ४ प्रकरण, क्षेत्रसमासादि जो पढते है वह सभी ग्रंथे जीवाभिगम अपरग्च पन्नवणासूत्र के ही पदार्थ है। यह आगम सूत्र ४७०० श्लोक प्रमाण का है।

४) **श्री प्रज्ञापना सूत्र-** यह आगम समवायांग सूत्र का उपांग है। इसमे ३६ पदो का वर्णन है। प्राय: ८००० श्लोक प्रमाण का यह सूत्र है।

५) **श्री सुर्यप्रज्ञप्ति सूत्र :-**

६) **श्री चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र :-** इस दो आगमो मे गणितानुयोग मुख्य विषय रहा है। सूर्य, चन्द्र, ग्रहादि की गति, दिनमान ऋतु अयनादि का वर्णन है, दोनो आगमो मे २२००, २२०० श्लोक है।

७) **श्री जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र :-** यह आगम भी अगले दो आगमों की तरह गणितानुयोग मे है। यह ग्रंथ नाम के मुताबित जंबूद्विप का सविस्तर वर्णन है। ६ आरे के स्वरूप बताया है। ४५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

८) **श्री निरयावली सूत्र :-** इन आगम ग्रंथो में हाथी और हारादि के कारण नानाजी का दोहित्र के साथ जो भयंकर युद्ध हुआ उस मे श्रेणिक राजा के १० पुत्र मरकर नरक मे गये उसका वर्णन है।

९) **श्री कल्पावतंसक सूत्र :-** इसमें पद्मकुमार और श्रेणिकपुत्र कालकुमार इत्यादि १० भाइओं के १० पुत्रों का जीवन चरित्र है।

१०) **श्री पुष्पिका उपांग सूत्र :-** इसमें १० अध्ययन है। चन्द्र, सूर्य, शुक्र, बहुपुत्रिका देवी, पूर्णभद्र, माणिभद्र, दत्त, शील, जल, अणाढ्य श्रावक के अधिकार है।

११) **श्री पुष्पचुलीका सूत्र :-** इसमें श्रीदेवी आदि १० देवीओ का पूर्वभव का वर्णन है।

१२) **श्री वृष्णिदशा सूत्र :-** यादववंश के राजा अंधकवृष्णि के समुद्रादि १०पुत्र, १० मे पुत्र वासुदेव के पुत्र बलभद्रजी, निषधकुमार इत्यादि १२ कथाएं है। अंतके पांचो उपांगो को निरियावली पग्चक भी कहते है।

दश प्रकीर्णक सूत्र

१) **श्री चतुशरण प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में अरिहन्त, सिद्ध, साधु और गच्छधर्म के आचार के स्वरूप का वर्णन एवं चारों शरण की स्वीकृति है।

२) **श्री आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस आगम का विषय है अंतिम आराधना और मृत्युसुधार

३) **श्री भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में पंडित मृत्यु के तीन प्रकार (१) भक्त परिज्ञा मरण (२) इंगिनी मरण (३) पादोपगमन मरण इत्यादि का वर्णन है।

६) **श्री संस्तारक प्रकीर्णक सूत्र :-** नामानुसार इस पयन्ने में संथारा की महिमा का वर्णन है। इन चारों पयन्ने पठन के अधिकारी श्रावक भी है।

७) **श्री तंदुल वैचारिक प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने को पूर्वाचार्यगण वैराग्य रस के समुद्र के नाम से चीन्हित करते है। १०० वर्षो में जीवात्मा कितना खानपान करे इसकी विस्तृत जानकारी दी गई है। धर्म की आराधना ही मानव मन की सफलता है। ऐसी बातों से गुंफित यह वैराग्यमय कृति है।

८) **श्री चन्दाविजय प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु सुधार हेतु कैसी आराधना हो इसे इस पयन्ने में समजाया गया है।

९) **श्री देवेन्द्र-स्तव प्रकीर्णक सूत्र :-** इन्द्र द्वारा परमात्मा की स्तुति एवं इन्द्र संबधित अन्य बातों का वर्णन है।

१०A) **श्री मरणसमाधि प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु संबधित आठ प्रकरणों के सार एवं अंतिम आराधना का विस्तृत वर्णन इस पयन्ने में है।

१०B) **श्री महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में साधु के अंतिम समय में किए जाने योग्य पयन्ना एवं विविध आत्महितकारी उपयोगी बातों का विस्तृत वर्णन हे।

१०C) **श्री गणिविद्या प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में ज्योतिष संबधित बड़े ग्रंथो का सार है।

उपरोक्त दसों पयन्नों का परिमाण लगभग २५०० श्लोकों में बध्य हे। इसके अलावा २२ अन्य पयन्ना भी उपलब्ध हैं। और दस पयन्नों में चंदाविजय पयन्नो के स्थान पर गच्छाचार पयन्ना को गिनते हैं।

छह छेद सूत्र

(१) निशिथ सूत्र (२) महानिशिथ सूत्र (३) व्यवहार सूत्र (४) जीतकल्प सूत्र (५) पंचकल्प सूत्र (६) दशा श्रुतस्कंध सूत्र

इन छेद सूत्र ग्रन्थों में उत्सर्ग, अपवाद और आलोचना की गंभीर चर्चा है। अति गंभीर केवल आत्मार्थ, भवभीरू, संयम में परिणत, जयणावंत, सूक्ष्म दष्टि से द्रव्यक्षेत्रादिक विचार धर्मदष्टि से करने वाले, प्रतिपल छहकाया के जीवों की रक्षा हेतु चिंतन करने वाले, गीतार्थ, परंपरागत उत्तम साधु, समाचारी पालक, सर्वजीवो के सच्चे हित की चिंता करने वाले ऐसे उत्तम मुनिवर जिन्होंने गुरु महाराज की निश्रा में योगद्वहन इत्यादि करके विशेष योग्यता अर्जित की हो ऐसे मुनिवरों को ही इन ग्रन्थों के अध्ययन पठन का अधिकार है।

चार मूल सूत्र

१) **श्री दशवैकालिक सूत्र :-** पंचम काल के साधु साध्वीओं के लिए यह आगमग्रन्थ अमृत सरोवर सरीखा है। इसमें दश अध्ययन हैं तथा अन्त में दो चूलिकाए रतिवाक्या व, विविक्त चरिया नाम से दी हैं। इन चूलिकाओं के बारे में कहा जाता है कि श्री स्थूलभद्रस्वामी की बहन यक्षासाध्वीजी महाविदेहक्षेत्र में से श्री सीमंधर स्वामी से चार चूलिकाए लाइ थी। उनमें से दो चूलिकाएं इस ग्रंथ में दी हैं। यह आगम ७०० श्लोक प्रमाण का है।

२) **श्री उत्तराध्ययन सूत्र :-** परम कृपालु श्री महावीरभगवान के अंतिम समय के उपदेश इस सूत्र में हैं। वैराग्य की बातें और मुनिवरों के उच्च आचारों का वर्णन इस आगम ग्रंथ में ३६ अध्ययनों में लगभग २००० श्लोकों द्वारा प्रस्तुत हें।

३) **श्री निर्युक्ति सूत्र :-** चरण सत्तरी-करण सत्तरी इत्यादि का वर्णन इस आगम ग्रन्थ में है। पिंडनिर्युक्ति भी कई लोग ओघ निर्युक्ति के साथ मानते हैं अन्य कई लोग इसे अलग आगम की मान्यता देते हैं। पिंडनिर्युक्ति में आहार प्राप्ति की रीत बताइ हें। ४२ दोष कैसे दूर हों और आहार करने के छह कारण और आहार न करने के छह कारण इत्यादि बातें हैं।

४) **श्री आवश्यक सूत्र :-** छह अध्ययन के इस सूत्र का उपयोग चतुर्विध संघ में छोट बडे सभी को है। प्रत्येक साधु साध्वी, श्रावक-श्राविका के द्वारा अवश्य प्रतिदिन प्रात: एवं सायं करने योग्य क्रिया (प्रतिक्रमण आवश्यक) इस प्रकार हैं :-

(१) सामायिक (२) चतुर्विंशति (३) वंदन (४) प्रतिक्रमण (५) कार्योत्सर्ग (६) पच्चक्खाण

दो चूलिकाए

१) **श्री नंदी सूत्र :-** ७०० श्लोक के इस आगम ग्रंन्थ में परमात्मा महावीर की स्तुति, संघ की अनेक उपमाए, २४ तीर्थंकरों के नाम ग्यारह गणधरों के नाम, स्थविरावली और पांच ज्ञान का विस्तृत वर्णन है।

२) **श्री अनुयोगद्वार सूत्र :-** २००० श्लोकों के इस ग्रन्थ में निश्चय एवं व्यवहार के आलंबन द्वारा आराधना के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी गइ है। अनुयोग-याने शास्त्र की व्याख्या जिसके चार द्वार है (१) उत्क्रम (२) निक्षेप (३) अनुगम (४) नय

यह आगम सब आगमों की चावी है। आगम पढने वाले को प्रथम इस आगम से शुरुआत करनी पडती है। यह आगम मुखपाठ करने जैसा है।

॥ इति शम् ॥

Introduction

45 *Āgamas*, a short sketch

I Eleven *Aṅgas* :

(1) **Ācārāṅga-sūtra :** It deals with the religious conduct of the monks and the Jain householders. It consists of 02 Parts of learning, 25 lessons and among the four teachings on entity, calculation, religious discourse and the ways of conduct, the teaching of the ways of conduct is the main topic here. The Āgama is of the size of 2500 *Ślokas*.

(2) **Sūyagaḍāṅga-sūtra :** It is also known as Sūtra-Kṛtāṅga. It's two parts of learning consist of 23 lessons. It discusses at length views of 363 doctrine-holders. Among them are 180 ritualists, 84 non-ritualists, 67 agnostics and 32 restraint-propounders, though it's main area of discussion is the teaching of entity. It is available in the size of 2000 *Ślokas*.

(3) **Ṭhāṇāṅga-sūtra :** It begins with the teaching of calculation mainly and discusses other three teachings subordinately. It introduces the topic of one dealing with the single objects and ends with the topic of eight objects. It is of the size of 7600 *Ślokas*.

(4) **Samavāyāṅga-sūtra :** This is an encompendium, introducing 01 to 100 objects, then 150, 200 to 500 and 2000 to crores and crores of objects. It contains the text of size of 1600 *Ślokas*.

(5) **Vyākhyā-prajñapti-sūtra :** It is also known as Bhagavatī-sūtra. It is the largest of all the *Aṅgas*. It contains 41 centuries with subsections. It consists of 1925 topics. It depicts the questions of Gautama *Gaṇadhara* and answers of Lord Mahāvīra. It discusses the four teachings in the centuries. This *Āgama* is really a treasure of gems. It is of the size of more than 15000 *Ślokas*.

(6) **Jñātādharma-Kathāṅga-sūtra :** It is of the form of the teaching of the religious discourses. Previously it contained three and a half crores of discourses, but at present there are 19 religious discourses. It is of the size of 6000 *Ślokas*.

(7) **Upāsaka-daśāṅga-sūtra :** It deals with 12 vows, life-sketches of 10 great Jain householders and of Lord Mahāvīra, too. This deals with the teaching of the religious discourses and the ways of conduct. It is of the size of around 800 *Ślokas*.

(8) **Antagaḍa-daśāṅga-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the religious discourses. It contains brief life-sketches of the highly spiritual souls who are born to liberate and those who are liberating ones : they are Andhaka Vṛṣṇi, Gautama and other 9 sons of queen Dhāriṇī, 8 princes like Akṣobhakumāra, 6 sons of Devaki, Gajasukumāra, Yādava princes like Jāli, Mayālī, Vasudeva Kṛṣṇa, 8 queens like Rukmiṇī. It is available of the size of 800 *Ślokas*.

(9) **Anuttarovavāyi-daśāṅga-sūtra :** It deals with the teaching of the religious discourses. It contains the life-sketches of those who practise the path of religious conduct, reach the *Anuttara Vimāna*, from there they drop in this world and attain Liberation in the next birth. Such souls are Abhayakumāra and other 9 princes of king Śrenika, Dīrghasena and other 11 sons, Dhannā *Aṇagāra*, etc. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(10) **Praśna-vyākaraṇa-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the ways of conduct. As per the remark of the Nandī-sūtra, it contained previously Lord Mahāvīra's answers to the questions put by gods, Vidyādharas, monks, nuns and the Jain householders. At present it contains the description of the ways leading to transgression and the self-control. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(11) **Vipāka-sūtrāṅga-sūtra :** It consists of 2 parts of learning. The first part is called the Fruition of miseries and depicts the life of 10 sinful souls, while the second part called the Fruition of happiness narrates illustrations of 10 meritorious souls. It is available of the size of 1200 *Ślokas*.

II Twelve *Upāṅgas*

(1) **Uvavāyi-sūtra :** It is a subservient text to the *Ācārāṅga-sūtra*. It deals with the description of Campā city, 12 types of austerity, procession-arrival of Koṅika's marriage, 700 disciples of the monk Ambaḍa. It is of the size of 1000 *Ślokas*.

(2) **Rāyapaseṇī-sūtra :** It is a subservient text to Sūyagaḍāṅga-sūtra. It depicts king Pradesī's jurisdiction, god Sūryābha worshipping the Jina idols, etc. It is of the size of 2000 *Ślokas*.

(3) **Jīvābhigama-sūtra :** It is a subservient text to Ṭhāṇāṅga-sūtra. It deals with the wisdom regarding the self and the non-self, the Jambū continent and its areas, etc. and the detailed description of the veneration offered by god Vijaya. The four chapters on areas, society, etc. published recently are composed on the line of the topics of this *Sūtra* and of the Pannāvaṇā-sūtra. It is of the size of 4700 *Ślokas*.

(4) **Pannāvaṇā-sūtra :** It is a subservient text to the Samavāyāṅga-sūtra. It describes 36 steps or topics and it is of the size of 8000 *Ślokas*.

(5) **Sūrya-prajñapti-sūtra** and

(6) **Candra-prajñapti-sūtra :** These two falls under the teaching of the calculation. They depict the solar and the lunar transit, the movement of planets, the variations in the length of a day, seasons, northward and the southward solstices, etc. Each one of these *Āgamas* are of the size of 2200 *Ślokas*.

(7) **Jambūdvīpa-prajñapti-sūtra :** It mainly deals with the teaching of the calculations. As it's name indicates, it describes at length the objects of the Jambū continent, the form and nature of 06 corners (*āra*). It is available in the size of 4500 *Ślokas*.

Nirayāvalī-pañcaka :

(8) **Nirayāvalī-sūtra :** It depicts the war between the grandfather and the daughter's son, caused of a necklace and the elephant, the death of king Śreṇika's 10 sons who attained hell after death. This war is designated as the most dreadful war of the Downward (*avasarpiṇī*) age.

(9) **Kalpāvataṁsaka-sūtra :** It deals with the life-sketches of Kālakumara and other 09 princes of king Śreṇika, the life-sketch of Padamakumara and others.

(10) **Pupphiyā-upāṅga-sūtra :** It consists of 10 lessons that covers the topics of the Moon-god, Sun-god, Venus, queen Bahuputrikā, Pūrṇabhadra, Maṇibhadra, Datta, Śila, Bala and Aṇāḍḍhiya.

(11) **Pupphaculīya-upāṅga-sūtra :** It depicts previous births of the 10 queens like Śrīdevī and others.

(12) **Vahnidaśā-upāṅga sūtra :** It contains 10 stories of Yadu king Andhakavṛṣṇi, his 10 princes named Samudra and others, the tenth one Vāsudeva, his son Balabhadra and his son Niṣadha.

III Ten *Payannā-sūtras* :

(1) **Āurapaccakhāṇa-sūtra :** It deals with the final religious practice and the way of improving (the life so that the) death (may be improved).

(2) **Bhattaparinnā-sūtra :** It describes (1) three types of *Paṇḍita* death, (2) knowledge, (3) Iṅgini devotee (4) *Pādapopagamana*, etc.

(4) **Santhāraga-payannā-sūtra :** It extols the *Saṁstāraka*.

**** These four payannās can also be learnt and recited by the Jain householders. ****

(5) **Tandula-viyāliya-payannā-sūtra :** The ancient preceptors call this Payannā-sūtra as an ocean of the sentiment of detachment. It describes what amount of food an individual soul will eat in his life of 100 years, the human life can be justified by way of practising a religious life.

(6) **Candāvijaya-payannā-sūtra :** It mainly deals with the religious practice that improves one's death.

(7) **Devendrathui-payannā-sūtra :** It presents the hymns to the Lord sung by Indras and also furnishes important details on those Indras.

(8) **Maraṇasamādhi-payannā-sūtra :** It describes at length the final religious practice and gives the summary of the 08 chapters dealing with death.

(9) **Mahāpaccakhāṇa-payannā-sūtra :** It deals specially with what a monk should practise at the time of death and gives various beneficial informations.

(10) **Gaṇivijaya-payannā-sūtra :** It gives the summary of some treatise on astrology.

These 10 Payannās are of the size of 2500 *Ślokas*.

Besides about 22 Payannās are known and even for these above 10 also there is a difference of opinion about their names. The Gacchācāra is taken, by some, in place of the Candāvijaya of the 10 Payannās.

IV Six *Cheda-sūtras*

(1) Vyavahāra-sūtra, (2) Nisītha-sūtra,
(3) Mahānisītha-sūtra, (4) Pancakalpa-sūtra,
(5) Daśāśruta-skandha-sūtra and (6) Bṛhatkalpa-sūtra.

These Chedasūtras deal with the rules, exceptions and vows.

The study of these is restricted only to those best monks who are (1) serene, (2) introvert, (3) fearing from the worldly existence, (4) exalted in restraint, (5) self-controlled, (6) rightfully descerning the subtlety of entity, territories, etc. (7) pondering over continuously the protection of the six-limbed souls, (8) praiseworthy, (9) exalted in keeping the tradition, (10) observing good religious conduct, (11) beneficial to all the beings and (12) Who have paved the path of Yoga under the guidance of their master.

V Four *Mūlasūtras*

(1) **Daśavaikālika-sūtra :** It is compared with a lake of nectar for the monks and nuns established in the fifth stage. It consists of 10 lessons and ends with 02 Cūlikās called Rativākyā and Vivittacariyā. It is said that monk Sthūlabhadra's sister nun Yakṣā approached Simandhara Svāmī in the Mahāvideha region and received four Cūlikās. Here are incorporated two of them.

(2) **Uttarādhyayana-sūtra :** It incorporates the last sermons of Lord Mahāvīra. In 36 lessons it describes detachment, the conduct of monks and so on. It is available in the size of 2000 *Ślokas*.

(3) **Anuyogadvāra-sūtra :** It discusses 17 topics on conduct, behaviour, etc. Some combine Piṇḍaniryukti with it, while others take it as a separate *Āgama*. Piṇḍaniryukti deals with the method of receiving food (*bhikṣā* or *gocarī*), avoidance of 42 faults and to receive food, 06 reasons of taking food, 06 reasons for avoiding food, etc.

(4) **Āvaśyaka-sūtra :** It is the most useful *Āgama* for all the four groups of the Jain religious constituency. It consists of 06 lessons. It describes 06 obligatory duties of monks, nuns, house-holders and housewives. They are : (1) *Sāmāyika*, (2) *Caturviṁśatistava*, (3) *Vandanā*, (4) *Pratikramaṇa*, (5) Kāyotsarga and (6) *Paccakhāṇa*.

VI Two *Cūlikās*

(1) **Nandī-sūtra :** It contains hymn to Lord Mahāvīra, numerous similies for the religious constituency, name-list of 24 *Tīrthaṅkaras* and 11 *Gaṇadharas*, list of *Sthaviras* and the fivefold knowledge. It is available in the size of around 700 *Ślokas*.

(2) **Anuyogadvāra-sūtra :** Though it comes last in the serial order of the 45 *Āgamas*, the learner needs it first. It is designated as the key to all the *Āgamas*. The term *Anuyoga* means explanatory device which is of four types : (1) Statement of proposition to be proved, (2) logical argument, (3) statement of accordance and (4) conclusion.

It teaches to pave the righteous path with the support of firm resolve and wordly involvements.

It is of the size of 2000 *Ślokas*.

આગમ - ૮

ધર્મકથાનુયોગમય અંતકૃદ્દશાંગસૂત્ર - ૮

અન્યનામ :- અંતગડદશા

શ્રુતસ્કંધ ------ ----------૧

વર્ગ ---------- ૮

અધ્યયન ------ ----------૯૦

પદ ----- ----------૨૩,૨૮,૦૦૦

ઉપલબ્ધ મૂલપાઠ ---- ----------૯૦૦ શ્લોક પ્રમાણ

ગદ્યસૂત્ર ----- -------*------ ૨૬

પદ્યસૂત્ર ----- ----------૧૧

પ્રથમ વર્ગ

(૧) અધ્યયન : ગૌતમ

પ્રથમ વર્ગના આરંભમાં દસ અધ્યયનોના નામ પછી ગૌતમ નામના અધ્યયનમાં દ્વારિકા વર્ણન, રૈવતક પર્વત, નંદનવન ઉદ્યાન, સુરપ્રિય યક્ષાયતન અને અશોક વૃક્ષના વર્ણન પછી વાસુદેવ કૃષ્ણનું વર્ણન તેમજ દ્વારિકા નગરીના વૈભવનું વર્ણન કરીને અંધકવૃષ્ણી રાજા અને ધારિણી રાણીના રાજકુમારપુત્ર ગૌતમનો આઠ કન્યાઓ સાથે વિવાહ, ભગવાન અરિષ્ટનેમિનું સમવસરણ, ગૌતમકુમારના વૈરાગ્ય, દીક્ષા, ૧૧ અંગોનું અધ્યયન, તપ આરાધન, પડિમા આરાધન, અંતિમ સાધના, શત્રુંજય પર્વતપર એક માસની સંલેખના, બાર વર્ષના શ્રમણજીવન અને નિર્વાણનું વર્ણન છે.

(૨-૧૦) આ નવ અધ્યયનોમાં પિતા વૃષ્ણી અને માતા ધારિણીના સમુદ્ર, સાગર, ગંભીર, સ્તિમિત, અચલ, કપિલ, અક્ષોભ, પ્રસેનજિત્ અને વિષ્ણુ રાજકુમારોના વૈરાગ્ય, દીક્ષા, શ્રમણ જીવન અને નિર્વાણ વગેરે વર્ણનો છે.

દ્વિતીય વર્ગ

અધ્યયન : અક્ષોભ

(૧-૮) આ આઠ અધ્યયનોમાં પિતા વૃષ્ણી અને માતા ધારિણીના અનુક્રમે અક્ષોભ, સાગર, સમુદ્ર, હિમવંત, અચલ, ધરણ, પૂરણ અને અભિચંદ્ર રાજકુમારોના ગુણરત્ન તપ, ૧૬ વર્ષનું શ્રમણ જીવન, અંતિમ આરાધના, શત્રુંજય પર્વતપર એક માસની સંલેખના અને અંતે નિર્વાણનું વર્ણન છે.

તૃતીય વર્ગ

(૧) અધ્યયન : અનિયશ

આ વર્ગના આરંભે દસ અધ્યયનોના નામ પછી ભદ્દિલપુર નગર, શ્રીવન ઉદ્યાન નાગ અને સુલસાના અનિયશકુમાર નો ૩૨ કન્યાઓ સાથે વિવાહ, ભગવાન અરિષ્ટનેમિના સમવસરણ પછી વૈરાગ્ય અને પ્રવ્રજ્યાગ્રહણ, ચૌદ પૂર્વોનું અધ્યયન, ૨૦ વર્ષનું શ્રમણ જીવન, શત્રુંજય પર્વત પર અંતિમ સાધના, એક માસની સંલેખના અને અંતે નિર્વાણનું વર્ણન છે.

(૨-૬) આ પાંચ અધ્યયનોમાં નાગ અને સુલસાના કુમારો અનુક્રમે અનંતસેન, અનિહત, વિદુ, દેવયશ અને શત્રુંજયના દીક્ષાથી માંડીને નિર્વાણ સુધીનું વૃત્તાન્ત છે.

(૭) અધ્યયન : સારણ

આ અધ્યયનમાં દ્વારિકા નગરીના વસુદેવરાજાના સારણકુમાર ના ૫૦ કન્યાઓ સાથે એકસાથે વિવાહ, ચૌદ પૂર્વોનું અધ્યયન, ૨૦ વર્ષનો શ્રમણ પર્યાય, શત્રુંજય પર્વત પર અંતિમ આરાધના અને અંતે નિર્વાણનું વર્ણન છે.

(૮) અધ્યયન : ગજસુકુમાર

આ અધ્યયનમાં ભગવાન અરિષ્ટનેમિનું સમવસરણ, ત્રણ સંઘાટક (બે શ્રમણોનું એક સંઘાટક) માં છ અણગારોનું દેવકીરાણી પાસે ગોચરી માટે આગમન, દેવકીની જિજ્ઞાસા, ભગવાન દ્વારા સમાધાન, દેવકીરાણીનું આર્તધ્યાન, શ્રીકૃષ્ણ દ્વારા આર્તધ્યાન તથા હરિણગમેષી દેવનું આરાધન, ગજસુકુમારનો જન્મ, વૈરાગ્ય વગેરેનું વિસ્તૃત વર્ણન છે.

(૯) અધ્યયન : સુમુખ

આ અધ્યયનમાં દ્વારિકાનગરી, રાજા બળદેવ, રાણી ધારિણી, તેમનો સુમુખકુમાર, તેનો ૫૦ કન્યાઓ સાથે વિવાહ, ભગવાન નેમિનાથનું સમવસરણ, પ્રવચન અને સુમુખકુમારની પ્રવ્રજ્યા, ૨૦ વર્ષનું સાધુજીવન, શત્રુંજય પર્વત પર અંતિમ સાધના અને મુક્તિગમનનું વર્ણન છે.

(૧૦-૧૨) આ ત્રણ અધ્યયનોમાં રાજા વાસુદેવ અને રાણી ધારિણીના દુમુખ, કૂપહારક અને દારુક નામના કુમારોના આરાધન વગેરે પૂર્વવત્ વર્ણનો છે.

(૧૩) અધ્યયન : અનાધૃષ્ટિ

આ અધ્યયનમાં રાજા વસુદેવ અને ધારિણીના અનાધૃષ્ટિ કુમારના જીવનવૃત્તાંત અને નિર્વાણનું વર્ણન છે.

ચતુર્થ વર્ગ

(૧) અધ્યયન : જાલી

આ વર્ગના આરંભે દસ અધ્યયનોના નામ પછી દ્વારિકા નગરીના રાજા વસુદેવ અને રાણી ધારિણીના જાલીકુમારનો ૫૦ કન્યાઓ સાથે વિવાહ, ભગવાન અરિષ્ટનેમિનું સમવસરણ, પ્રવચનના અંતે જાલીકુમારને વૈરાગ્ય, પ્રવ્રજ્યા, ૧૨ અંગોનું અધ્યયન, ૧૬ વર્ષનું સાધુજીવન, શત્રુંજય પર્વત પર સંલેખના અને અંતે સિદ્ધિગતિનું વર્ણન છે.

(૨-૬) આ પાંચ અધ્યયનોમાં પિતા શ્રીકૃષ્ણ અને માતા રુક્મિણીના અનુક્રમે મયાલી, ઉવયાલી, પુરિસસેન, વારિસેન અને પ્રદ્યુમ્ન કુમારોના વિવાહ, પ્રવ્રજ્યા અને નિર્વાણના વર્ણનો છે.

(૭) અધ્યયન : સામ્બ

આ અધ્યયનમાં પિતા શ્રીકૃષ્ણ અને માતા જાંબવતીના સામ્બકુમારના વિવાહથી આરંભીને સિદ્ધપદની પ્રાપ્તિ સુધીનું વર્ણન છે.

(૮-૯) આ બે અધ્યયનોમાં પિતા પ્રદ્યુમ્ન અને માતા વૈદર્ભીના બે રાજકુમારો અનિરુદ્ધ અને સત્યનેમિના વિવાહ, પ્રવ્રજ્યા, નિર્વાણ વગેરેનું વર્ણન છે.

(૧૦) અધ્યયન : દઢનેમિ

આ અધ્યયનમાં પિતા સમુદ્રવિજય અને માતા શિવાના દઢનેમિ નામના કુમારના જીવનવૃત્તાંત અને નિર્વાણનું વર્ણન છે.

પંચમ વર્ગ

(૧) અધ્યયન : પદ્માવતી

આ અધ્યયનમાં દ્વારિકાનગરીના શ્રીકૃષ્ણ વાસુદેવ અને પદ્માવતી રાણીના વર્ણન પછી, ભગવાન અરિષ્ટનેમિનું સમવસરણ, દેશના, શ્રીકૃષ્ણ દ્વારા દ્વારિકા વિષે પ્રશ્નોત્તરી, ભગવાન દ્વારા દ્વારિકા વિનાશનો ઉત્તર, શ્રીકૃષ્ણની ચિંતા, પદ્માવતીની પ્રવ્રજ્યા લેવાની ઘોષણા, યક્ષિણી આર્યા પાસે પ્રવ્રજ્યા, ૧૧ અંગોનું અધ્યયન, ૨૦ વર્ષનું શ્રમણી જીવન, એક માસની સંલેખના અને અંતે શિવપદની પ્રાપ્તિ વગેરે વર્ણન છે.

(૨-૮) આ સાત અધ્યયનોમાં તે તે નામ પ્રમાણે અનુક્રમે ગૌરી, ગંધારી, લક્ષણા, સુસીમા, જાંબવતી, સત્યભામા અને રુક્મિણીના પ્રવ્રજ્યાગ્રહણથી શિવપદ પ્રાપ્તિ વગેરે વર્ણન છે.

(૯) અધ્યયન : મૂલશ્રી

આ અધ્યયનમાં પિતા કૃષ્ણ વાસુદેવ અને માતા જાંબવતીના પુત્ર સામ્બકુમારની પત્ની મૂલશ્રીના વિષે ભગવાન અરિષ્ટનેમિના સમવસરણથી માંડીને સિદ્ધપદ પ્રાપ્તિ સુધીનું વર્ણન છે.

(૧૦) અધ્યયન : મૂલદત્તા

આ અધ્યયનમાં રાણી મૂલદત્તાનું ભગવાનના સમવસરણ પછી પ્રવ્રજ્યાથી માંડીને સિદ્ધિપદ પ્રાપ્તિ સુધીનું વર્ણન છે.

ષષ્ઠ વર્ગ

(૧) અધ્યયન : મકાઈ

આ વર્ગના આરંભે ૧૬ અધ્યયનોના નામ પછી આ અધ્યયનમાં રાજગૃહ નગર, ગુણશીલ ચૈત્ય અને રાજા શ્રેણિકના વર્ણન પછી મકાઈના વૈરાગ્ય, પ્રવ્રજ્યા, ૧૧ અંગોનું અધ્યયન, ગુણરત્નતપ આરાધના, ૧૬ વર્ષનું સાધુ જીવન અને વિપુલગિરિ પર્વત પર નિર્વાણ વગેરે વર્ણન છે.

(૨) અધ્યયન : કિંકિમ

આ અધ્યયનમાં કિંકિમનું જીવનવૃત્તાંત અને નિર્વાણપ્રાપ્તિનું વર્ણન છે.

(૩) અધ્યયન : મુદ્ગલપાણિ

આ અધ્યયનમાં રાજગૃહ, ગુણશીલ ચૈત્ય, રાજા શ્રેણિક, રાણી ચેલણા, માળી અર્જુન, તેની પત્ની બંધુમતી, ઉદ્યાન, મુદ્ગલપાણિ યક્ષનું મંદિર, હજાર પલના વજનવાળું મુદ્ગલ, લલિતા ગોષ્ઠીના માળી અર્જુન અને બંધુમતી સાથે દુર્વ્યવહાર, અર્જુનની યક્ષને પ્રાર્થના, બંધનથી મુક્તિ, પણ અર્જુન દ્વારા છ માસસુધી પ્રતિદિન છ પુરુષો અને એક સ્ત્રીનો સંહાર, ભગવાન મહાવીરનું સમવસરણ, શ્રમણોપાસક સુદર્શન શેઠનું પ્રભુને વંદનમાં અર્જુન માળીનો ઉપસર્ગ, માળીનો વૈરાગ્ય, છ માસનો શ્રમણ પર્યાય, ૧૫ દિવસની સંલેખના અને સિદ્ધિપદની પ્રાપ્તિ વગેરે વર્ણન છે.

(૪) અધ્યયન : કાશ્યપ

આમાં કાશ્યપના ૧૬ વર્ષના શ્રમણ પર્યાય અને વિપુલગિરિ પર મુક્તિગમન વગેરે વર્ણન છે.

(૫) અધ્યયન : ક્ષેમક

આ અધ્યયનમાં કાકંદી નગરીના ક્ષેમકના વિપુલગિરિ પર મોક્ષગમન સુધીનું વર્ણન છે.

(૬-૭) આ બે અધ્યયનોમાં અનુક્રમે ધૃતિધર અને સાકેત નગરના કૈલાસના ૧૨ વર્ષના શ્રમણ પર્યાય અને વિપુલગિરિ પર મુક્તિગમન વગેરે વર્ણન છે.

(૮-૯) આ બે અધ્યયનોમાં અનુક્રમે હરિચંદન અને રાજગૃહ નગરીના ખાસ્તકના ૧૨

વર્ષના શ્રમણ પર્યાય અને વિપુલગિરિ પર મોક્ષગમનનું વર્ણન છે.

(૧૦) અધ્યયન : સુદર્શન

આ અધ્યયનમાં વાણિજ્ય ગામના સુદર્શનનું પાંચ વર્ષ નિર્ગ્રંથ જીવન અને વિપુલગિરિ પર મોક્ષગમન વગેરે વર્ણન છે.

(૧૧-૧૩) આ અધ્યયનમાં અનુક્રમે શ્રાવસ્તીનગરીના પૂર્ણભદ્ર, સુમનભદ્ર અને સુપ્રતિષ્ઠના ૨૭ વર્ષના શ્રમણજીવન અને વિપુલગિરિ પર નિર્વાણ વગેરે વર્ણન છે.

(૧૪) અધ્યયન : મેઘ

આ અધ્યયનમાં રાજગૃહના મેઘનું વિપુલગિરિ પર નિર્વાણ સુધીનું વર્ણન છે.

(૧૫) અધ્યયન : અતિમુક્ત

આ અધ્યયનમાં પોલાસપુર નગર, શ્રીવન ઉદ્યાન, રાજા વિજય અને રાણી શ્રીદેવીના વર્ણન પછી રાજકુમાર અતિમુક્ત, ભગવાન મહાવીરના સમવસરણ વખતે શ્રી ગૌતમ ગણધરનું ભિક્ષા માટે જવું, અતિમુક્તનું ધર્મશ્રવણ, દીક્ષા, ૧૧ અંગોનું અધ્યયન, ગુણરત્ન તપની આરાધના, વિપુલગિરિ પર મોક્ષગમન વગેરે વર્ણન છે.

(૧૬) અધ્યયન : અલક્ષ

આ અધ્યયનમાં વારાણસી નગરી, કામ મહાવન ચૈત્ય અને રાજા અલક્ષના વર્ણન પછી ભગવાન મહાવીરનું સમવસરણ, પ્રવચન, રાજાને વૈરાગ્ય, દીક્ષા ગ્રહણ, ૧૧ અંગોનું અધ્યયન, વિપુલગિરિ પર નિર્વાણ વગેરે વર્ણન છે.

સપ્તમ વર્ગ

(૧) અધ્યયન : નંદા

આ અધ્યયનમાં રાજગૃહ નગરી, ગુણશીલ ચૈત્ય, રાજા શ્રેણિક, રાણી નંદા અને ભગવાનના સમવસરણ વગેરે વર્ણન પછી રાણી નંદાને વૈરાગ્ય, ૧૧ અંગોનું અધ્યયન, ૨૦ વર્ષનું શ્રમણી જીવન અને નિર્વાણ વગેરે વર્ણન છે.

(૨-૧૩) આ ૧૨ અધ્યયનોમાં અનુક્રમે રાજા શ્રેણિકની ૧૨ રાણીઓ નંદમતી, નંદોત્તરા, નંદશ્રેણિકા, મહકા, સુમરુતા, મહામરુતા, મરુદેવા, ભદ્રા, સુભદ્રા, સુજાતા, સુમના અને ભૂતદિન્નાના જીવન વૃત્તાંતનું વર્ણન છે.

અષ્ટમ વર્ગ

(૧) અધ્યયન : કાલી

આ અધ્યયનમાં ચંપા નગરી, પૂર્ણભદ્ર ચૈત્ય, રાજા કોણિક, માતા રાણી કાલીદેવી, ભગવાન મહાવીરનું સમવસરણ, પ્રવચન વગેરે વર્ણન પછી કાલીદેવીની પ્રવ્રજ્યા, ૧૧ અંગોનું અધ્યયન, આર્યા ચંદનબાલા પાસે આજ્ઞા અને રત્નાવલી તપ આરાધના, આઠ વર્ષનું શ્રમણી જીવન, એક મહિનાની સંલેખના અને નિર્વાણ વગેરે વર્ણન છે.

(૨) અધ્યયન : સુકાલી - કનકાવલી તપની આરાધના.

(૩) અધ્યયન : મહાકાલી - ક્ષુદ્રસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની આરાધના.

(૪) અધ્યયન : કૃષ્ણા - મહાસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની આરાધના.

(૫) અધ્યયન : સુકૃષ્ણા - સાત, આઠ, નવ, દસ ભિક્ષુપ્રતિમાની આરાધના.

(૬) અધ્યયન : મહાકૃષ્ણા - ક્ષુદ્ર સર્વતોભદ્ર પ્રતિમાની આરાધના.

(૭) અધ્યયન : વીરકૃષ્ણા - મહાસર્વતોભદ્ર પ્રતિમાની સાધના.

(૮) અધ્યયન : રામકૃષ્ણા - ભદ્રોત્તર પ્રતિમાની સાધના.

(૯) અધ્યયન : પિતૃસેનકૃષ્ણા - મુક્તાવલી તપની આરાધના.

(૧૦) અધ્યયન : મહાસેન કૃષ્ણા - આયંબિલ વર્ધમાન તપની આરાધના.

ઉપરના બધાને ૧૭ વર્ષનો દીક્ષા પર્યાય, એક માસની સંલેખના અને સિદ્ધિપદ પ્રાપ્તિ વગેરે વર્ણન છે.

सिरि उसहदेव सामिस्स णमो। सिरि गोडी - जिराउला - सव्वोदय यास णाहाणं णमो। नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ - महइ - महावीर वद्धमाणं सामिस्स। सिरि गोयम - सोहम्माइ सव्व गणहराणं णमो। सिरि सुगुरु - देवाणं णमो। श्री ऋषभस्वामिने नमः श्री गोडीजी - जिरावल्ली - सर्वोदय पार्श्वनाथेभ्यो नमः श्री महावीराय नमः श्री गौतम-सुधर्मादि सर्व गणधरेभ्योनमः **卐卐卐 श्रीमदन्तकृद्दशाङ्गम् 卐卐卐** तेणं कालेणं० चंपानामं नगरी पुन्नभद्दे चेतिए वन्नओ, तेणं कालेणं० अज्जसुहम्मे समोसरिए परिसा निग्गया जाव पडिगया, तेणं का० अज्जसुहम्मस्स अंतेवासी अज्जजंबू जाव पज्जुवासति, एवं वदासी- जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं अयमट्ठे पं० अट्ठमस्स णं भंते ! अंगस्स अंतगडदसाणं० के अट्ठे पं० ?, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ठ वग्गा पं० जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ठ वग्गा पं० पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पं० ?, एवं खलु जंबू ! समणेणं० अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पं० तं०- 'गोयम समुद्द सागर गंभीरे चेव होइ थिमिते य। अयले कंपिले खलु अक्खोभ पसेणती विण्हू ॥१॥ जति णं भंते ! समणेणं जाव संप० अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पं० पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पं० ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं० बारवतीणामं नगरी होत्था, दुवालसजोयणायामा नवजोअणवित्थिण्णा धणवइमतिनिम्माया चामीकरपागारा नाणारामणिपंचवन्नकविसीसगमंडिया सुरम्मा अलकापुरिसंकासा पमुदितपक्कीलिया पच्चक्खं देवलोगभूया पासादीया०, तीसे णं बारवतीनयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभागे एत्थे णं रेवतते नामं पव्वते होत्था, तत्थ णं रेवतते पव्वते नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था वन्नओ, सुरप्पिए नामं जक्खायतणे होत्था पोराणे०, से णं एगेणं वणसंडेणं०, असोगवरपायवे, तत्थ णं बारवतीनयरीए कण्हे वासुदेवे राया परिवसति महता० रायवन्नतो, से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं पज्जुन्नपामोक्खाणं अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं संबपामोक्खाणं सट्ठीए दुद्दंतसाहस्सीणं महसेणपामोक्खाणं छप्पण्णाए बलवगसाहस्सीणं वीरसेणपामोक्खाणं एगवीसाते वीरसाहस्सीणं उग्गसेणपा० सोलसण्हं रायसाहस्सीणं रुप्पिणिपा० सोलसण्हं देवीसाहस्सीणं अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं ईसरजावसत्थवाहाणं बारवतीए अद्धभरहस्स य समत्तस्स आहेवच्चं जाव विहरति, तत्थ णं बारवतीए नयरीए अंधगवण्ही णामं राया परिवसंति, महताहिमवंत० वन्नओ, तस्स णं अंधगवण्हिस्स रन्नो धारिणी नामं देवी होत्ता वन्नाओ, तते णं सा धारिणी देवी अन्नदा कदाई तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि एवं जहा महब्बले 'सुमिणदंसण कहणा जम्मं बालत्तणं कलातो य। जोव्वण पाणिग्गहणं कंता पासाय भोगा य ॥२॥ नवरं गोयमो नामेणं, अट्ठण्हं रायवरकन्नाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति अट्ठट्ठओ दाओ, तेण कालेणं० अरहा अरिट्ठनेमी आदिकरे जाव विहरति, चउव्विहा देवा आगया कण्हेवि णिग्गए, तते णं तस्स गोयमस्स कुमारस्स जहा मेहे तहा णिग्गते धम्मं सोच्चा जं नवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि देवाणुप्पियाणं० एवं जहा मेहे अणगारे जाते जाव इणमेव णिग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरति, तते णं से गोयमे अन्नदा कयाई अरहतो अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्करस अंगाइं अहिज्जति त्ता बहूहिं चउत्थ जाव भावेमाणे विहरति, तते णं अरिहा अरिट्ठनेमी अन्नदा कदाई बारवतीतो नंदणवणातो पडिनिक्खमति बहिया जणवयविहारं विहरति, तते णं से गोयमे अणगारे अन्नदा कदाई जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवा० त्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आदा० पदा० एवं व०- इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाते समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, एवं जहा खंदतो तहा बारस भिक्खुपडिमातो फासेति त्ता गुणरयणंपि तवोकम्मं तहेव फासेति निरवसेसं जहा खंदतो तहा चिंतेति तहा आपुच्छति तहा थेरेहिं सद्धिं सेत्तुअं दुरूहति मासियाए संलेहणाए बारस वरिसाइं परिताते जाव सिद्धे० ।१। एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं

સૌજન્ય :- પ. પૂ. કવિન્દ્રસાગરજી મ.સા. પ.પૂ. વીરભદ્રસાગરજી મ.સા., પ.પૂ. મહોદયસાગરજી મ.સા.ની ગણિપદની ત્રીજી વાર્ષિક તિથિએ
મુમુક્ષુ દીપક રાયશી ગાલા પરિવાર (કચ્છ) ચાંગડાઈ

पढमवग्गपढमअज्झयणस्स अयमट्ठे पं०, एवं जहा गोयमो तहा सेसा वण्ही पिया धारिणी माता समुद्दे सागरे गंभीरे थिमिए अयले कंपिल्ले अक्खोभे पसेणती विण्हुए एए, एगगमो। **पढमो वग्गो दस अज्झयणा** ।।२। [**जति दोच्चस्स वग्गस्स**] उक्खेवतो, तेणं कालेणं० बारवतीते णगरीए बण्ही पिया धारिणी माता- 'अक्खोभ सागरे खलु समुद्द हिमवंत अचलनामे य। धरणे य पूरणेवि य अभिचंदे चेव अट्ठमते।३।। जहा पढमो वग्गो तहा सव्वे अट्ठ अज्झयणा गुणरयणतवोकम्मं सोलस वासइं परियाओ सेत्तुञ्जे मासियाए संलेहणाए सिद्धी।३। [**जति तच्चस्स उक्खेवतो**], एवं खलु जंबू ! तच्चस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं तेरस अज्झयणा अणीयसे अणंतसेणे अणिहए विऊ देवजसे सत्तुसेणे सारणे गए सुमुहे दुम्मुहे कुवए दारुए अणाहिट्ठी १३, जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं तच्चस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं तेरस अज्झयणा पं० तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमअज्झयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पं० ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं० भद्दिलपुरे नामं नगरे होत्था वन्नओ, तस्स णं भद्दिलपुरस्स० उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए सिरिवणे नामं उज्जाणे होत्था वन्नओ, जितसत्तू राया, तत्थणं मद्दिलपुरे नयरे नागे नामं गाहावती होत्था अड्ढे०, तस्स णं नागस्स गाहावतिस्स सुलसा नामं भारिया होत्था सूमाला जाव सुरुवा, तस्स णं नागस्स गाहावतिस्स पुत्ते सुलसाए भारियाए अत्तए अणीयजसे नामे कुमारे होत्था सूमाले जाव सुरुवे पंचधातीपरिक्खित्ते तं०- खीरधाती जहा दढपइन्ने जाव गिरि० सुहं० परिवड्ढति, तते णं तं अणीयजसं कुमारं सातिरेगअट्ठवासजायं अम्मापियरो कलायरिय जाव भोगसमत्थे जाते यावि होत्था, तते णं तं अणियजसं कुमारं उम्मुक्कबालभावं जाणेत्ता अम्मापियरो कलायरिय जावबत्तीसाए इब्भवरकन्नगाणं एगदिवसेण पाणिं गेण्हावेंति, तते णं से नागे गाहावती अणीयजसस्स कुमारस्स इमं एयारूवं पीतिदाणं दलयति तं०- बत्तीसं हिरण्णकोडीओ जहा महब्बलस्स जाव उप्पिं पासा० फुट्ट० विहरति, तेणं कालेणं० अरहा अरिट्ठ जाव समोसढे सिरिवणे उज्जाणे जहा जाव विहरति परिसा णिग्गया, तते णं तस्स अणीयजसस्स तं महा० जहा गोयमे तहा नवरं सामाइयमातियाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जति वीसं वासातिं परिताओ सेसं तहेव जाव सेत्तुञ्जे पव्वते मासियाए संलेहणाए जाव सिद्धे०, एवं खलु जंबू ! समणेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स पढमअज्झयणस्स अयमट्ठे पं०, एवं जहा अणीयजसे, एवं सेसावि अणंतसेणे जाव सत्तुसेणे जाव सत्तुसेणे छ अज्झयणा एक्कगमा बत्तीसदो दाओ वीसं वासा परियातो चोद्दस० सेत्तुञ्जे सिद्धा ☆☆☆।। **छट्ठमज्झयणं समत्तं।☆☆☆** तेणं कालेणं० बारवतीए नयरीए जहा पढमे नवरं वसुदेवे राया धारिणी देवी सीहो सुमिणे सारणे कुमारे पन्नासतो दातो चोद्दस पुव्वा वीसं वासा परिताओ सेस जहा गोयमस्स जाव सेत्तुञ्जे सिद्धे०। जति० उक्खेओ अट्ठमस्स, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं० बारवतीए नगरीए जहा पढमे जाव अरहा अरिट्ठनेमी सामी समोसढे, तेणं कालेणं० अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी छ अणगारा भायरो सहोदरा होत्था सरिसया सरित्तया सरिव्वया नीलुप्पलगुलियअयसिकुसुमप्पगासा सिरिवच्छंकियवच्छा कुसुमकुंडलभद्दलया नलकुब्बरसमाणा, तते णं ते छ अणगारा जं चेव दिवसं मुंडा भवेत्ता अगाराओ अणगारियं पव्वतिया तं चेव दिवसं अरहं अरिट्ठनेमीं वंदंति णमंसंति त्ता एवं व०- इच्छामो णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्म संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरित्तते, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडि०, तते णं ते छ अणगारा अरहया अरिट्ठनेमिणा अब्भणुन्नाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरंति, तते णं ते छ अणगारा अन्नया कयाई छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेंति जहा गोयमो जाव इच्छामो णं छट्ठक्खमणस्स पारणाए तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा तीहिं संघाडएहिं बारवतीए नयरीए जाव अडित्तते, अहासुहं०, तते णं ते छ अणगारा अरहया अरिट्ठनेमिणा अब्भणुन्नाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमिं वंदंति णमंसंति त्ता अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतियातो सहसंबवणातो पडिनिक्खमंति त्ता तीहिं संघाडएहिं अतुरियं जाव अडंति, तत्थ णं एगे संघाडए बारवतीए नयरीए उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाते अडमाणे २ वसुदेवस्स रन्नो देवतीए देवीते गेहे अणुपविट्ठे, तते णं सा देवती देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासति त्ता हट्ठजावहियया आसणातो अब्भुट्ठेति त्ता सत्तट्ठ पयाइं० तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति त्ता वंदति णमंसति त्ता जेणेव भत्तघरते तेणेव उवागया सीहकेरासाणं मोयगाणं थालं भरेति ते अणगारे पडिलाभेति वंदति णमंसंति त्ता पडिविसज्जेति, तदाणंतरं च णं

दोच्चे संघाडते बारवतीते उच्च जाव विसज्जेति, तदाणंतरं च णं तच्चे संघाडते बारवतीए नगरीए उच्चनीय जाव पहिलाभेति त्ता एवं वदासी-किण्णं देवाणुप्पिया ! कणहस्स वासुदेवस्स इमीसे बारवतीए नगरीते नवजोयण० पच्चक्खदेवलोगभूताए समणा निग्गंथा उच्चणीय जाव अडमाणा भत्तपाणं णो लभंति जन्नं ताइं चेव कुलाइं भत्तपाणाए भुज्जो २ अणुप्पविसंति ? तते णं ते अणगारा देवतीं देवीं एवं व०- नो खलु देवा० ! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे बारवतीते नगरीते जाव देवलोगभूयाते समणा निग्गंथा उच्चनीय जाव अडमाणा भत्तपाणं णो लभंति नो चेव णं ताइं ताइं कुलाइं दोच्चंपि तच्चंपि भत्तपाणाए अणुपविसंति, एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे भद्दिलपुरे नगरे नागस्स गाहावतिस्स पुत्ता सुलसाते भारियाए अत्तया छ भायरो सहोदरा सरिसया जाव नलकुब्बरसमाणा अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा संसारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं मुंडा जाव पव्वइया, तते णं अम्हे जं चेव दिवसं पव्वतिता तं चेव दिवसं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदामो नमंसामो त्ता इमं एयारुवं अभिग्गहं अभिगेण्हामो-इच्छामो णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा जाव अहासुहं०, तते णं अम्हे अरहता० अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरामो तं अम्हे अज्ज छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमाए पोरसीए जाव अडमाणा तव गेहं अणुप्पविट्ठा, तं नो खलु देवाणुप्पिए ! ते चेव णं अम्हे, अम्हे णं अन्ने, देवतीं देवीं एवं वदंति त्ता जामेव दिसं पाउ० तामेव दिसं पडिगता, तीसे देवतीते देवीए अयमेयारुवे अज्झ० समुप्पन्ने, एवं खलु अहं पोलासपुरे नगरे अतिमुत्तेणं कुमारसमणेणं बालत्तणे वागरिता तुमं णं देवाणु० अट्ठ पुत्ते पयातिस्ससि सतिसए जाव नलकुब्बरसमाणे नो चेव णं भारहे वासे अन्नातो अम्मयातो तारिसए पुत्ते पयातिस्संति तं णं मिच्छा, इमं णं पच्चक्खमेव दिस्सति भारहे वासे अन्नातोवि अम्मताओ एरिसे जाव पुत्ते पयायाओ तं गच्छामि णं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदामि त्ता इमं च णं एयारुवं वागरणं पुच्छिस्सामीतिकट्टु एवं संपेहेति त्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति त्ता एवं व०- लहुकरणप्पवर जाव उवट्ठवेंति, जहा देवाणंदा जाव पज्जुवासति, तते णं अरहा अरिट्ठनेमी देवतीं देवीं एवं व०- से नूणं तव देवती ! इमे छ अणगारे पोसेत्ता अयमेयारुवे अब्भत्थि० एवं खलु अहं पोलासपुरे नगरे अइमुत्तेणं तं चेव णिग्गच्छसि त्ता जेणेव ममं अंतियं हव्वमागया से नूणं देवती ! अत्थे समट्ठे ?. हंता अत्थि. एवं खलु देवा० ! तेणं कालेणं० भद्दिलपुरे नगरे नागे नामं गाहावती परिवसति अड्ढे०- तस्स णं नागस्स गाहा० सुलसा नामं भारिया होत्था. सा सुलसा गाहा० बालत्तणे चेव निमित्तिएणं वागरिता-एस णं दारिया णिंदू भविस्सति. तते णं सा सुलसा बालप्पभितिं चेव हरिणेगमेसीभत्तया यावि होत्थाहरिणेगमेसिस्स पडिमं करेति त्ता कल्लाकल्लिं ण्हता जाव पायच्छित्ता उल्लपडसाडया महरिहं पुप्फच्चणं करेति त्ता जंनुपायडिया पणामं करेति ततो पच्छा आहारेति वा नीहारेति वा वरति वा. तते णं तीसे सुलसाए गाहा० भत्तिबहुमाणसुस्सूसाए हरिणेगमेसी देवे आराहिते यावि होत्था. तते णं से हरिणेगमेसी देवे सुलसाए गाहावइणीए अणुकंपणट्ठयाए सुलसं गाहावतिणिं तुमं च दोवि समउउयाओ करेति. तते णं तुब्भे दोवि सममेव गब्भे गिण्हह सममेव गब्भे परिवहह सममेव दारए पयायह. तए णं सा सुलसा गाहावतिणी विणिहायमावन्ने दारए पयायति. तते णं से हरिणेगमेसी देवे सुलसाए अणुकंपणट्ठाते विणिहायमावण्णए दारए करतलसंपुडेणं गेण्हति त्ता तव अंतियं साहरति त्ता तंसमयं च णं तुमंपि णवण्हं मासाणं० सुकुमालदारए पसवसि. जेऽविय णं देवाणुप्पिए! तव पुत्ता तेऽविय तव अंतिताओ करयलसंपुडेणं गेण्हति त्ता सुलसाए गाहा० अंतिए साहरति. तं तव चेव णं देवइ ! एए पुत्ता णो चेव सुलसाते गाहाव० तते णं सा देवती देवी अरहओ अरिट्ठ० अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठजावहियया अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति नमंसति त्ता जेणेव ते छ अणगारा तेणेव उवागच्छति ते छप्पि अणगारा वंदति णमंसति त्ता आगतपुण्हुता पप्फुतलोयणा कंचुयपडिक्खित्तया दरियवलयबाहा धाराहयकलंबपुप्फगंपिव समूससियरोमकूवा ते छप्पि अणगारे अणिमिसाते दिट्ठीए पेहमाणी २ सुचिरं निरिक्खति त्ता वंदति णमंसति त्ता जेणेव अरिहा अरिट्ठ० तेणेव उवाग० अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति त्ता वंदति णमंसति त्ता तमेव धम्मियं जाण० दूरूहति त्ता जेणेव बारवतीणगरी तेणेव उवा० त्ता बारवतिं नगरिं अणुप्पविसति त्ता जेणेव सते गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवाग० त्ता धम्मियातो जाणप्पवरातो पच्चोरुहति त्ता जेणेव सते वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवाग० त्ता सयंसि सयणिज्जंसि निसीयति, तते णं तीसे देवतीते देवीए अयं अब्भत्थिते० समुप्पण्णे. एवं खलु अहं

सरिसते जाव नलकुब्बरसमाणे सत्त पुत्ते पयाता, नो चेव णं मए एगस्सवि बालत्तणते समणुभूते, एसवियं णं कण्हे वासुदेवे छण्हं छण्हं मासाणं मम अंतियं पायवंदते हव्वमागच्छति. तं धन्नातो णं ताओ अम्मयाओ जासिं मण्णे णियगकुच्छिसंभूतयाइं थणदुद्धलुद्धयाइं महुरसमुल्लावयाइं मंमणपजंपियाइं थणमूलकक्खदेसभागं अभिसरमाणातिं मुद्धयाइं पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हऊण उच्छंगि णिवेसियाइं देंति समुल्लावते सुमहुरे पुणो २ मंजुलप्पभणिते, अहं णं अधन्ना अपुन्ना अकयपुन्ना एत्तो एक्कतरमपि न पत्ता, ओहय० जाव झियायति, इमं च णं कण्हे वासुदेवे ण्हाते जाव विभूसिते देवतीए देवीए पायवंदते हव्वमागच्छति, तते णं से कण्हे वासुदेवे देवइं देविं० पासति त्ता देवतीए देवीए पायग्गहणं करेति त्ता देवतीं देवीं एवं व०- अन्नदा णं अम्मो ! तुब्भे ममं पासेत्ता हट्ठ जाव भवह. किण्णं अम्मो ! अज्ज तुब्भे ओहय जाव झियायह ?, तए णं सा देवती देवी कण्हं वासुदेवं एवं व०- एवं खलु अहं पुत्ता ! सरिसए जाव समाणे सत्त पुत्ते पयाया नो चेव णं मए एगस्सवि बालत्तणे अणुभूते तुमंपिय णं पुत्ता ! ममं छण्हं २ मासाणं अंतियं पादवंदते हव्वमागच्छसि तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयातो जाव झियायामि, तए णं से कण्हे वासुदेवे देवतिं देविं एवं व०- मा णं तुब्भे अम्मो ! ओहय जाव झियायह अहण्णं तहा घत्तिस्सामि जहा णं ममं सहोदरे कणीयसे भाउए भविस्सतीतिकट्टु देवतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं वग्गूहिं समासासेति त्ता ततो पडिनिक्खमति त्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवा० त्ता जहा अभओ नवरं हरिणेगमेसिस्स अट्ठमभत्तं पगेण्हति जाव अंजलिं कट्टु एवं व०- इच्छामि णं देवाणु० ! सहोदरं कणीवसं भाउयं विदिण्णं, तते णं से हरिणेगमेसी कण्हं वासुदेवं एवं व०- होहिति णं अम्मो ! मम सहोदरे कणीयसे भाउएतिकट्टु देवतिं ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेति जामेव दिसं पाउब्भूते तामेव दिसं पडिगते, तए णं सा देवती देवी अन्नदा कदाई तंसि तारिसगंसि जाव सीहं सुमिणे पासेत्ता पडिबुद्धा जाव पाढया हट्ठहियया परिवहति, तते णं सा देवती देवी नवण्हं मासाणं जासुमणारत्तबंधुजीवतलक्खारससरसपारिजातकतरुणदिवाकरसमप्पभं सव्वनयणकंतं सुकुमालं जाव सुरूवं गततालुयसमाणं दारयं पयाया जम्मणं जहा मेहकुमारे जाव जम्हा णं अम्हं इमे दारते गततालुसमाणे तं होउ णं अम्ह एतस्स दारगस्स नामधेज्जे गयसुकुमाळे २, तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामं करेंति गयसुकुमालोत्ति सेसं जहा मेहे जाव अलं भोगसमत्थे जाते यावि होत्था, तत्थणं (१२६) वारवतीए नगरीए सोमिले नामं माहणे परिवसति अड्ढे रिउव्वेद जाव सुपरिनिट्ठिते यावि होत्था, तस्स णं सोमिलमाहणस्स सोमसिरी नामं माहणी होत्था सुमाल०, तस्स णं सोमिलस्स धूता सोमसिरीए माहणीए अत्तया सोमानामं दारिया होत्था सोभला जाव सुरूवा रूवेणं जाव लावण्णेणं उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा यावि होत्था. तते णं सा सोमा दारिया अन्नया कदाई ण्हाता जाव विभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता सतातो गिहातो पडिनिक्खमति त्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवा० त्ता रायमग्गंसि कणगतिंदूसएणं कीलमाणी चिट्ठति, तेणं कालेणं० अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे परिसा निग्गया, तते णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाते जाव विभूसिए गयसुकुमालेणं कुमारेणं सद्धिं हत्थिखंधवरगते सकोरंट० छत्तेणं धरेज्जमाणेणं सेअवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं अरहतो अरिट्ठनेमिस्स पायवंदते णिग्गच्छमाणे सोमं दारियं पासति त्ता सोमाए दारियाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जाव विम्हिए, तए णं कण्हे० कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ त्ता एवं व०- गच्छह णं तुब्भे देवाणु० ! सोमिलं माहणं जायित्ता सोमं दारियं गेण्हह त्ता कन्नंतेउरंसि पक्खिवह, तते णं एसा गयसुकुमालस्स कुमारस्स भारिया भविस्सति, तते णं कोडुंबिय जाव पक्खिवंति, तते णं से कण्हे वासुदेवे बारवतीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जाव पज्जुवासति, तते णं अरहा अरिट्ठनेमि कण्हस्स वासुदेवस्स गयसुकुमालस्स कुमारस्स तीसे य० धम्मकहा, कण्हे पडिगते, तते णं से गयसुकुमाले अरहतो अरिट्ठ० अंतियं धम्मं सोच्चा जं नवरं अम्मापियरं आपुच्छामि जहा मेहो महेलियावज्जं जाव वडिढयकुले तते णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव गयसुकुमाले तेणेव उवागच्छति त्ता गयसुकुमाजं आलिंगति त्ता उच्छंगे निवेसेति त्ता एवं व०- तुमं ममं सहोदरे कणीयसे भाया तं मा णं तुमं देवाणु० ! इयाणिं अरहतो० मुंडे जाव पव्वयहि, अहण्णं बारवतीए नयरीए महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचिस्सामि, तते णं से गयसुकुमाले कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठति, तए णं से गयसुकुमाले कण्हं वासुदेवं अम्मापियरो य दोच्चंपि तच्चंपि एवं व०- एवं खलु देवाणु० ! माणुस्सयाकामा खेलासवा जाव

विप्पजहियव्वा भविस्संति तं इच्छणं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुचण्णाये अरहतो अरिट्ठ० अंतिए जाव पव्वइत्तए, तते णं तं गयसुकुमालं कण्हे वासु० अम्मापियरो य जाहे नो संचाएति बहुयाहिं अणुलोमाहिं जाव आघवित्तते० ताहे अकामाइं चेव एवं वदासी-तं इच्छामो णं ते जाया ! एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तए निक्खमणं जहा महाबलस्स जाव तमाणाते तहा० तहा जाव संजमित्तते, से गय० अणगारे जाते ईरिया० जाव गुत्तबंभयारी, तते णं से गयसुकुमारे जं चेव दिवसं पव्वतिते तस्सेव दिवसस्स पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवा० त्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिकखुत्तो आयाहिणपयाहिणं० वंदति णमंसति त्ता एवं वदासी-इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाते समाणे महाकालंसि सुसाणंसि एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरेत्तते, अहासुहं देवाणु० !, तते णं से गय० अण० अरहता अरिट्ठ० अब्भणुन्नाए समाणे अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति णमंसति त्ता अरहतो अरिट्ठ० अंति० सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमति त्ता जेणेव महाकाले सुसाणे तेणेव उवागते त्ता थंडिल्लं पडिलेहेति त्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेति त्ता ईसिंपब्भारगएणं काएणं जाव दोवि पाए साहट्टु एगराइं महापडिमं उसंपज्जित्ताणं विहरति, इमे य णं सोमिले माडणे सामिधेयस्स अट्ठाते बारवतीओ नगरीओ बहिया पुव्वणिग्गते समिहातो य दब्भे य कुसे य पत्तामोडं च गेण्हति त्ता ततो पडिनियत्तति त्ता महाकालस्स कुमारस्स वेरनिज्जायणं करेत्तते, एवं संपेहेति त्ता दिसापडिलेहणं करेति त्ता सरसं मट्टियं गेण्हति त्ता जेणेव गयसुकुमाले अणगारे तेणेव उवा० त्ता गयसूमालस्स कुमारस्स मत्थए मट्टियाए पालिं बंधइ त्ता जलंतीओ चिययाओ फुल्लियकिंसुयसमाणे खयरंगारे कहल्लेणं गेण्हइ त्ता गयसूमालस्स अणगारस्स मत्थए पक्खिवति त्ता भीए० तओ खिप्पामेव अवक्कमइ त्ता जामेव दिसं पाउब्भूते०, तते णं तस्स गयसूमालस्स अणगारस्स सरीरयंसि वेयणा पाउब्भूता उज्जला जाव दुरहियासा, तते णं से गय० अणगारे सोमिलस्स माहणस्स मणसावि अप्पदुस्समाणे तं उज्जलं जाव अहियासेति, तए णं तस्स गय० अण० तं उज्जलं जाव अहियासेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थज्झवसाणेणं तदावरणिज्जाणं कम्माणं खएणं कम्मरयविकिरणकर अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणुत्तरे जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे, ततो पच्छा सिद्धे जावप्पहीणे, तत्थ णं अहासंनिहितेहिं देवेहिं सम्मं आराहितंतिकट्टु दिव्वे सुरभिगंधोदए वुट्ठे दसद्धवन्ने कुसुमे निवाडिते चेलुक्खेवे कए दिव्वे य गीयगंधव्वनिनाये कए यावि होत्था, तते णं से कण्हे वासुदेवे कल्लं पाउप्पभायाते जाव जलंते ण्हाते जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगते सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरेज्ज० सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं महयाभडचडगरपहकरवंदपरिक्खित्ते बारवतिं णगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव अरहा अरिट्ठ० तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं से कण्हे वासुदेवे बारवतीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणे एक्कं पुरिसं पासति जुन्नं जराज्जरियदेहं जाव किलंतं. महातिमहालयाओ इट्टगरासीओ एगमेगं इट्टगं गहाय बहिया रत्थापहातो अंतोगिहं अणुप्पविसमाणं पासति. तए णं से कण्हे वासुदेवे तस्स पुरिसस्स अणुकंपणट्ठाए हत्थिखंधवरगते चेव एगं इट्टगं गेण्हति त्ता बहिया रत्थापहाओ अंतोगिहं अणुप्पवेसेति. तते णं कण्हेणं वासुदेवेणं एगाते इट्टगाते गहिताते समाणीते अणेगेहिं पुरिससतेहिं से महालए इट्टगस्स रासी बहिया रत्थापहातो अंतोघरंसि अणुप्पवेसिए. तते णं से कण्हे वासुदेवे बारवतीए नगरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छति त्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेमि तेणेव उवागते त्ता जाव वंदति णमंसति त्ता गयसुकुमालं अणगारं अपासमाणे अरहं अरिट्ठनेमि वंदति णमंसति त्ता एवं व०-कहिं णं भंते ! से ममं सहोदरे कणीयसे भाया गयसुकुमाले अणगारे जा णं अहं वंदामि नमंसामि ? तते णं अरहा अरिट्ठनेमि कण्हं वासुदेवं एवं व०-साहिए णं कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं अप्पणो अट्ठे. तते णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वदासी-कहण्णं भंते ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं साहिते अप्पणो अट्ठे ?. तते णंअरहा अरिट्ठनेमि कण्हं वासुदेवं एवं व०-एवं खलु कण्हा ! गयसुकुमाले णं अणगारे णं ममं कल्लं पुव्वावरण्हकालसमयंसि वंदइ णमंसति त्ता एवं व०-इच्छामि णं उवसंपज्जित्ताणं विहरति. तए णं तं गयसुकुमालं अणगारं एगे पुरिसे पासत्ति त्ता आसुरूत्ते० जाव सिद्धे. तं एवं खलु कण्हा! गयसुकुमालेणं अणगारेणं साहिते अप्पणो अट्ठे २. तते णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं व०- केस णं भंते ! से पुरिसे अप्पत्थियपत्थए जाव परिवज्जिते जे णं ममं सहोदरं कणीयसं भायरं गयसुकुमालं अणगारं अकाले चेव जीवियातो ववरोविते. तए णं अरहा अरिट्ठनेमि कण्हं वासुदेवं एवं०-मा णं कण्हा ! तुमं तस्स पुरिसस्स पदोसमावज्जाहि. एवं

खलु कण्हा ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अणगारस्स साहिज्जे दिन्ने. कहण्णं भंते ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स णं साहेज्जे दिन्ने ? तए णं अरहा अरिट्ठनेमि कण्हं वासुदेवं एवं व०-से नूणं कण्हा ! ममं तुमं पायवंदए हव्वमागच्छमाणे बारवतीए नयरीए एगं पुरिसं पाससि जाव अणुपविसिते, जहा णं कण्हा ! तुमं तस्स पुरिसस्स साहिज्जे दिन्ने एवमेव कण्हा ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अणगारस्स अणेगभवसयसहस्ससंचितं कम्मं उदीरेमाणेणं बहुकम्मणिज्जरत्थं साहिज्जे दिन्ने. तते णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं व०-से णं भंते ! पुरिसे मते कहं जाणियव्वे ?, तए णं अरहा अरिट्ठ० कण्हं वासुदेवं एवं व०- जे णं कण्हा ! तुमं बारवतीए ववरीए अणुपविसमाणं पासेत्ता ठितए चेव ठितिभेएणं कालं करिस्सति तण्णं तुमं जाणेज्जासि एस णं से पुरिसे. तते णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति नमंसति त्ता जेणेव आभिसेयं हत्थिरयणं तेणेव उवा० त्ता हत्थिं दुरूहति त्ता जेणेव बारवती नगरी जेणेव सते गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तस्स सोमिलमाहणस्स कल्लं जाव जलंते अयमेयारूवे अब्भत्थिए० समुप्पन्ने-एवं खलु कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं पायवंदए निग्गते तं नायमेयं अरहता विन्नायमेयं अरहता सुतमेयं अरहता सिट्ठमेयं अरहया भविस्सइ कण्हस्स वासुदेवस्स तं न नज्जति णं कण्हे वासुदेवे ममं केणवि कुमारेणं मारिस्सतित्तिकट्टु भीते० सयातो गिहातो पडिनिक्खमति कण्हस्स वासुदेवस्स बारवतिं नगरिं अणुपविसमाणस्स पुरतो सपक्खिं सपडिदिसिं हव्वमागते. तते णं से सोमिले माहणे कण्हं वासुदेवं सहसा पासेत्ता भीते० ठिते य चेव ठितिभेयं कालं करेति धरणितलंसि सव्वंगेहिं धसत्ति संनिवडिते. तते णं से कण्हे वासुदेवे सोमिलं माहणं पासति त्ता एवं व०-एस णं देवाणुप्पिया ! से सोमिले माहणे अप्पत्थियपत्थए जाव परिवज्जिते जेणं ममं सहोयरे कनीयसे भायरे गयसुकुमाले अणगारे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविएत्तिकट्टु सोमिलं माहणं पाणेहिं कड्ढावेति त्ता मूमिं पाणिएणं अब्भोक्खावेति त्ता जेणेव सते गिहे तेणेव उवागते सयं गिहं अणुपविट्ठे. एवं खलु जंबू ! जाव स० अंत० तच्चस्स वग्गस्स अट्ठमज्झयणस्स अयमट्ठे पं० । ६ । नवमस्स उक्खेवओ. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं० बारवतीए नयरीए जहा पढमए जाव विहरति. तत्थ णं बारवतीए बलदेवे नामं राया होत्था वन्नओ. तस्स णं बलदेवस्स रन्नो धारिणीनामं देवी होत्था वन्नओ. तते णं सा धारिणी सीहं सुमिणे जहा गोयमे नवरं सुमुहे नामं कुमारे पन्नासं कन्नाओ पन्नासओ दाओ चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जति वीसं वासाइं परियातो सेसं तं चेव सेत्तुञे सिद्धे. निक्खेवओ । एवं दुम्मुहेवि कूवदारएवि. तिन्निवि बलदेवधारिणीसुया, दारुएवि एवं चेव. नवरं वसुदेवधारिणिसुते. एवं अणाधिट्ठीवि वसुदेवधारिणीसुते. एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव सं० अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेरसमस्स अज्झयणस्स अयट्ठे पं० वग्गो३ । ७ । जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पं० चउत्थस्सके अट्ठे पं० ?. एवं खलु जंबू ! सम० जाव सं० [**चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा**] पं० तं०- 'जालि मयालि उवयाली पुरिससेणे य वारिसेणे य । पज्जुन्न संब अनिरुद्धे सच्चनेमी य दढनेमी ॥४ ॥ जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पं० पढमस्स णं० अज्झयणस्स के अट्ठे पं० ?, एवं खलु जंबू ! तेणं का० बारवती नगरी तीसे जहा पढमे कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं जाव विहरति, तत्थ णं बारवतीए नगरीए वसुदेवे राया धारिणी वन्नतो जहा गोयमो नवरं जालिकुमारे पन्नासतो दातो बारसंगी सोलस वासा परिताओ सेसं जहा गोयमस्स' जाव सेत्तुञे सिद्धे । एवं मयाली उवयाली पुरिससेणे य वारिसेणे य एवं पज्जुन्नेवित्ति नवरं कण्हे पिया रुप्पिणी माता, एवं संबेऽवि, नवरं जंबवती माता, एवं अनिरुद्धेवि नवरं पज्जुन्ने पिया वेदब्भी माया, एवं सच्चनेमी. नवरं समुद्दविजये पिता सिवा माता, दढनेमीवि, सट्ठ एगगमा. चउत्थवग्गस्स निक्खेवओ । वग्गो ४ ।८ । जति णं भंते ! सम० जाव सं० चउत्थमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते पंचमस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं समरेणं जाव सं० के अट्ठे पं० ?. एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झ० पं० तं०. पउमावती य गोरी गंधारी लक्खणा सुसीमा य । जंबवइ सच्चभामा रूप्पिणि मूलसिरि मूलदत्तावि ॥५॥ जति णं भंते ![**पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा**] पं० पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पं० ?. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं० बारवती नगरी जहा पढमे जाव कण्हे वासुदेवे आहे० जाव विहरति. तस्स णं कण्हस्स वासु० पउमावती नाम देवी होत्था

वन्नओ. तेणं कालेणं० अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे जाव विहरति. कण्हे वासुदेवे णिग्गते जाव पज्जुवासति. तते णं सा पउमावती देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा हट्ठ० जहा देवती जाव पज्जुवासति. तए णं अरिहा अरिट्ठ० कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावतीए य धम्मकहा परिसा पडिगता, तते णं कण्हे० अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति णमंसति त्ता एवं व०.इमीसे णं भंते ! बारवतीए नगरीए नवजोयणा जाव देवलोगभूताए किंमूलाते विणासे भविस्सति ?. कण्हाति ! अरहा अरिट्ठ० कण्हं वासु० एवं व०.एवं खलु कण्हा ! इमीसे बारवतीए नयरीए नवजोयणा जाव भूयाए सुरग्गिदीवायणमूलाए विणासे भविस्सति. कण्हस्स वासुदेवस्स अरहतो अरिट्ठ० अंतिए एयं सोच्चा निसम्म एवं अब्भत्थिए० धन्ना णं ते जालिमयालिपुरिससेणवारिसेणपज्जुन्नसंबअनिरूद्धदढनेमिसच्चनेमिप्पभियतो कुमारा जे णं चइत्ता हिरण्णं जाव परिभाएत्ता अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतियं मुंडा जाव पव्वतिया, अहण्णं अधन्ने अकयपुन्ने रज्जे य जाव अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिते० नो संचाएमि अरहतो अरिट्ठ जाव पव्वतित्तए, कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं व०. से नूणं कण्हा ! तव अयमब्भत्थिए०-धन्ना णं ते जाव पव्वतित्तते. से नूणं कण्हा ! अट्ठे समट्ठे ?. हंता अत्थि. तं नो खलु कण्हा ! तंएवं भूतं वा भव्वं वा भविस्सति वा जन्नं वासुदेवा चइत्ता हिरण्णं जाव पव्वइस्संति, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-न एयं भूयं वा जाव पव्वतिस्संति ?. कण्हाति ! अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं व०-एवं खलु कण्हा ! सव्वेवि य णं वासुदेवा पुव्वभवे निदाणकडा, से एतेणट्ठेणं कण्हा ! एवं वुच्चति-न एयं भूयं० पव्वइस्संति, तते णं से कण्हे वासु० अरहं अरिट्ठ० एवं व०--अहं णं भंते ! इतो कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिस्सामि कहिं उववज्जिस्सामि ?, तते णं अरिहा अरिट्ठ० कण्हं वासु० एवं व०- एवं खलु कण्हा ! बारवतीए नयरीए सुरदीवायणकोवनिद्दड्ढाए अम्मापिइनियगविप्पहूणे रामेण बलदेवेण सद्धिं दाहिणवेयालिं अभिमुहे जोहिटिठल्लपामोक्खाणं पंचण्हं पंडवाणं पंडुरायपुत्ताणं पासं पंडुमहुरं संपत्थिते कोसंबवणकाणणे नग्गोहवरपायवस्स अहे पुढवीसिलापट्टए पीतवत्थपच्छाइयसरीरे जरकुमारेणं तिक्खेणं कोदंडविप्पमुक्केणं इसुणा वामे पादे विद्धे समाणे कालमासे कालं किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उज्जलिए नरए नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि, तते णं कण्हे वासुदेवे अरहतो अरिट्ठ० अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म ओहय जाव झियाति. कण्हाति ! अरहा अरिट्ठ० कण्हं वासुदेवं एवं व०-मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहय जाव झियाहि, एवं खलु तुमं देवाणु० ! तच्चातो पुढवीओ उज्जलियाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेसाए उस्सप्पिणीए पुंडेसु जणवतेसु सयदुवारे बारसमे अममे नामं अरहा भविस्ससि, तत्थ तुमं बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणेत्ता सिज्झिहिसि०. तते णं से कण्हे वासुदेवे अरहतो अरिट्ठ० अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० अप्फोडेति त्ता वग्गति त्ता तिवतिं छिंदति त्ता सीहनायं करेति त्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति णमंसति त्ता तमेव अभिसेक्कं हत्थिं दुरूहति त्ता जेणेव बारमती णगरी जेणेव सते गिहे तेणेव उवागते अभिसेयहत्थिरयणातो पच्चोरूहति जेणेव बाहरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सते सीहासणे तेणेव उवागच्छति त्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति त्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति त्ता एवं व०-गच्छह णं तुब्भे देवाणु० ! बारवतीए नयरीए सिंघाडग जाव उग्घोसेमारा २ एवं वयह-एवं खलु देवाणुप्पिया ! बारवतीए नयरीए नवजोयणा जाव भूयाए सुरग्गिदीवायणमूलाते विणासे भविस्सति तं जो णं देवा० ! इच्छति बारवतीए नयरीए राया वा जुवराया वा ईसरे वा तलवरे वा माडंबियकोडुंबियइब्भसेट्ठी वा देवी वा कुमारो वा कुमारी वा अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे जाव पव्वइत्तए तं णं कण्हे वासुदेवे विसज्जेति, पच्छातुरस्सवि य से अहापवित्तं वित्तिं अणुजाणति महता इड्ढीसक्कारसमुदएण य से निक्खमणं करेति, दोच्चंपि तच्चंपि घोसणयं घोसेह त्ता मम एयं० पच्चप्पिणह, तए णं ते कोडुंबिय जाव पच्चप्पिणंति, तते णं सा पउमावती देवी अरहतो० अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जावहियया अरहं अरिट्ठनेमीं वंदति णमंसति त्ता एवं व०- सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं० से जहेतं तुब्भे वदह, जं नवरं देवाणु० कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि तते णं अहं देवा० ! अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि, अहासुहं०, तए णं सा पउमावती देवी धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहति त्ता जेणेव बारवती नगरी जेणेव सते गिहे तेणेव उवागच्छति त्ता धम्मियातो जाणातो पच्चोरूभति त्ता जेणेव कण्हे वासुदेवे ते० उ० करयल० कट्टु एवं व०-इच्छामि णं देवाणु० ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाता समाणी अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडा जाव पव्व०, अहासुहूं०, तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबिते सद्दावेति त्ता एवं व०-

★ અંતકૃત દશાંગસૂત્ર :

મુક્તાવલી, રત્નાવલી, કનકાવલી વગેરે ૧૨ પ્રકારના તપ વિષે જણાવી અંતે તેરમ વર્ધમાન તપની ચર્ચા છે. વળી અંતસમયે તપશ્ચર્યા અને શત્રુંજય મહાતીર્થ પર સંલેખના કરી મોક્ષ પામનારના જીવનચરિત્ર છે.

❊ अंतकृद् दशांगसूत्र :

मुक्तावली, रत्नावली, कनकावली इत्यादि १२ प्रकारके तपके बारे में बताकर तेरहवें वर्धमान तपका चित्रण है। अंतिम समयमें तपश्चर्या एवं शत्रुंजय महातीर्थ पर संलेखना कर के मोक्षको जानेवाले के जीवन चरित्र है।

* Antakṛd-daśāriga-Sūtra :

After narrating 12 types of austerity like Muktāvali, Ratnāvalī, Kanakāvali, etc. the 13th Vardhamāna penance is narrated. Besides these the Sūtra gives life-sketches of the liberated ones who practised penance at the end of their life and performed Saṁlekhanā on the Śatruñjaya holyplace.

खिप्पामेव पउमावतीते० महत्थं निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह त्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह० जाव पच्चप्पिणंति, तए णं से कण्हे वासुदेवे पउमावतीं देवीं पट्टयं दुरूहेति अट्ठसतेणं सोवण्ण कलस जाव महानिक्खमणाभिसेएणं अभिसिंचति त्ता सव्वालंकारविभूसियं करेति त्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सिबियं रदावेति बारवतीणगरीमज्झंमज्झेणं निग्गच्छति त्ता जेणेव रेवतते पव्वए जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवा० त्ता सीयं ठवेति पउमावती देवी सीतातो पच्चोरूभति० जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवा० त्ता अरहं अरिट्ठनेमीं तिक्खुत्तो आ० प० त्ता वं० न० त्ता एवं व०-एस णं भंते ! मम अग्गमहिसी पउमावतीनामं देवी इट्ठा कंता पिया मणुन्ना मणामा अभिरामा जाव किमंग पुण पासणयाए ? तन्नं अहं देवाणु० ? सिस्सिणिभिक्खं दलयामि पडिच्छंतु णं देवाणु० ! सिस्सिणिभिक्खं, अहासुहं०, त० सा पउमावती उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमति त्ता सयमेव आभरणालंकारं ओमुयति त्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति त्ता जेणेव अरहा अरि० तेणेव उवा० त्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति णमंसति त्ता एवं व०-आलित्ते जाव धम्ममाइक्खितं, तते णं अरहा अरिट्ठ० पउमावतीं देवीं सयमेव पव्वावेति सय० मुंडा० सय० जकिखणीते अज्जाते सिस्सिणिं दलयति, त० सा जक्खिणी अज्जा पउमावइं देवीं सयं पव्वा० जाव सजमियव्वं, तते णं सा पउमावती जाव संजमइ, त० सा पउमावती अज्जा जाता ईरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी, त० सा पउमावती अज्जा जक्खिणीते अज्जाते अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जति, बहूहिं चउत्थछट्ठ० विविहतव० भा० विहरति, त० सा पउमावती अज्जा बहुपडिपुन्नाइं वीसं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेति त्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेति त्ता जस्सट्ठाते कीरइ नग्गभावे जाव तमट्ठं आराहेति चरिमुस्सासेहिं सिद्धा० ।९। तेणं कालेणं० बारवई रेवतए उज्जाणे नंदणवणे, तत्थ णं बारव० कण्हे वासु० तस्स णं कण्हवासुदेवस्स गोरी देवी वन्नतो अरहा० समोसढे कण्हे णिग्गते गोरी जहा पउमावती तहा णिग्गया धम्मकहा परिसा पडिगता कण्हेवि तए णं सा गोरी जहा पउमावती तहा णिक्खंता जाव सिद्धा० : एवं गंधारी लक्खणा सुमीसा जंबवई सच्चमामा रूप्पिणी अट्ठवि पउमावतीसरिसाओ, अट्ठ अज्झयणा ।१०। तेणं कालेणं० बारवतीनगरीए रेवतते नंदणवणे कण्हे०, तत्थ णं बारवतीए नयरीए कण्हस्स वासुदेवस्स पुत्ते जंबवतीए देवीए अत्तते संबे नामं कुमारे होत्था, अहीण०, तस्स णं संवस्स कुमारस्स मूलसिरीनामं भारिया होत्था वन्नओ, अरहा० समोसढे कणहे णिग्गते मूलसिरीवि णिग्गया जहा पउमा० नवरं देवाणु० ! कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि जाव सिद्धा, एवं मूलदत्तावि । पंचमो वग्गो ।११। [**जति० छट्ठस्स उक्खेवओ, नवरं सोलस अज्झयणा**] पं० तं०-'मंकाती किंकमे चेव, मोग्गरपाणी य कासवे । खेमते धितिधरे चेव, केलासे हरिचंदणे ॥६॥ वारत्त सुदंसण पुन्नभद्द सुमणभद्द सुपइट्ठे मेहे । अइमुत्ते अ अलक्खे अज्झयणाणं तु सोलसयं ॥७॥ जइ सोलस अज्झयणा पं० पढमस्स अज्झयणस्स के अट्ठे पं० ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं० रायगिहे नगरे गुणसीलए चेतिते सेणिए राया मंकातीनामं गाहावती परिवसति अड्ढे जाव अपरिभूते, तेणं कालेणं० समणे भगवं महावीरे आदिकरे गुणसीलए जाव विहरति परिसा निग्गया, तते णं से मंकाती गाहावती इमीसे कहाए लद्धट्ठे जहा पन्नत्तीए गंगदत्ते तहेव इमोऽवि जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठवेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीए सीताते णिक्खंते जाव अणगारे जाते ईरियासमिते०, त० से मंकाती अणगारे समणस्स भगवतो० तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जति, सेसं जहा खंदगस्स, गुणरयणं तवोकम्मं सोलस वासाइं परियाओ तहेव विपुलेसिद्धे ।अ०१। किंकमेवि एवं चेव जाव विपुले सिद्धे ।अ०२।१२। तेणं कालेणं० रायगिहे गुणसीलते सेणिए राया चेल्लणा देवी, तत्थ णं रायगिहे अज्जुणए नामं मालागारे परिवसति अड्ढे जाव अपरिभूते, तस्स णं अज्जुणयस्स मालायारस्स बंधुमतीणामं भारिया होत्था सूमा०, तस्स णं अज्जुणयस्स मालावारस्स रायगिहस्स नगरस्स बहिया एत्थ णं महं एगे पुप्फारामे होत्था कण्हे जाव निउरंबभूते दसद्धवन्नकुसुमकुसुमिते पासातीए०, तस्स णं पुप्फारामस्स अदूरसामंते तत्थ णं अज्जुणयस्स मालायारस्स अज्जतपजज्जतपितिपज्जयागए अणेगकुलपुरिसपरंपरागते मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था, पोराणे दिव्वे सच्चे जहा पुण्णभद्दे, तत्थणं मोग्गरपाणिस्स पडिमा एगं महं पलसहस्सणिप्फण्णं अयोमयं मोग्गरं गहाय चिट्ठति, तं० से

अज्जुणते मालागारे बालप्पभितिं चेव मोग्गरपाणिजक्खभत्ते यावि होत्था, कल्लाकल्लिं पच्छियपिडगाइं गेण्हति त्ता रायगिहातो नगरातो पडिनिक्खमति त्ता जेणेव पुप्फारामे तेणेव उ० त्ता पुप्फुच्चयं करेति त्ता अग्गाइं वराइं पुप्फाइं गेण्हइ त्ता जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खाययरे तेणेव उ० मुग्गरपाणिस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणयं करेति त्ता जंनुपायवडिए पणामं करेति, ततो पच्छा रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणे विहरति, तत्थ णं रायगिहे नगरे ललिया नामं गोट्ठी परिवसति अड्ढा जाव अपरिभूता जंकयसुकया यावि होत्था, त० रायगिहे णगरे अन्नदा कदाई पमोदे घुट्ठे यावि होत्था, त० से अज्जुणते मालागारे कल्लं पभूयतराएहिं पुप्फेहिं कज्जमितिकट्टु पच्चूसकालसमयंसि बंधुमतीते भारियाते सद्धिं पच्छियपिडयातिं गेण्हति त्ता सयातो गिहातो पडिनिक्खमति त्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छति त्ता जेणेव पुप्फारामे तेणेव उवा० त्ता बंधुमतीते भारियाए सद्धिं पुप्फुच्चयं करेति, त० तीसे (१२७) ललियाते गोट्ठीते छ गोट्ठिल्ला पुरिसा जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागता त्ता अभिरममाणा चिट्ठंति, त० से अज्जुणते मालागारे बंधुमतीए भारियाए सद्धिं पुप्फुच्चयं करेति अग्गातिं वरातिं पुप्फातिं गहाय जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छति, तते णं छ गोट्ठिल्ला पुरिसा अज्जुणयं माला० बंधुमतीए भारियाए सद्धिं एज्जमाणं पासंति त्ता अन्नमन्नं एवं व०-एस णं देवाणु० ! अज्जुणते मालागारे बंधुमतीते भारियाते सद्धिं इहं हव्वमागच्छति तं सेयं, खलु देवाणु० ! अम्हं अज्जुणयं मालागारं अवओडयबंधणयं करेत्ता बंधुमतीते भारियाए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणाणं विहरित्तएत्तिकट्टु एयमट्ठं अन्नमन्नस्स पडिसुणेंति त्ता कवाडंतरेसु निलुक्कंति निच्चला निप्फंदा तुसिणीया पच्छण्णा चिट्ठंति, त० से अज्जुणते मालागारे बंधुमतीभारियाते सद्धिं जेणेव मोग्गरपारिजक्खाययणे तेणेव उवा० त्ता आलोए पणामं करेति महारिहं पुप्फच्चणं करेति जंनुपायपडिए पणामं करेति, तते णं ते छ गोट्ठिल्ला पुरिसा दवदवस्स कवाडंतरेहिंतो णिग्गच्छंति त्ता अज्जुणयं मालागारं गेण्हति त्ता अवओडगबंधणं करेंति. बंधुमतीए मालागारीए सद्धिं विपुलाइं भोग० भुंजमाणा विहरंति, त० तस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स अयमज्झत्थिए०-एवं खलु अहं बालप्पभितिं चेव मोग्गरपाणिस्स भगवओ कल्लाकल्लिं जाव कप्पेमाणे विहरामि, तं जति णं मोग्गरपाणिजक्खे इह संनिहिते होंते से णं किं ममं एयारूवं आवइं पावेज्जमाणं पासंते ?, तं नत्थि णं मोग्गरपाणी जक्खे इह संनिहिते. सुव्वत्तं तं एस कट्ठे, तते णं से मोग्गरपाणी जक्खे अज्जुणयस्स मालागारस्स अयमेयारूवं अब्भत्थियं जाव वियाणेत्ता अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरयं अणुपविसति त्ता तडतडतडस्स बंधाइं छिंदति, तं पलसहस्सणिप्फण्णं अयोमयं मोग्गरं गेण्हति त्ता ते इत्थिसत्तमे पुरिसे घातेति, त० से अज्जुणते मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं अण्णाइट्ठे समाणे रायगिहस्स नगरस्स परिपेरंतेणं कल्लाकल्लिं छ इत्थिसत्तमे पुरिसे घातेमाणे विहरति, रायगिहे णगरे सिंघाडगजावमहापहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति०-एवं खलु देवाणु० ! अज्जुणते मालागारे मोग्गरपाणिणा अण्णाइट्ठे समाणे रायगिहे णगरे बहिया छ इत्थिसत्तमे पुरिसे घायेमाणे विहरति, त० से सेणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबिय० सद्दावेति त्ता एवं व०एवं खलु देवा० ! अज्जुणते मालागारे जाव घातेमाणे जाव विहरति तं मा णं तुब्भे केती कट्ठस्स वा तणस्स वा पाणियस्स वा पुप्फफलाणं वा अट्ठाते सतिरं निग्गच्छतु मा णं तस्स सरीरस्स वावत्ती भविस्सतित्तिकट्टु दोच्चपि तच्चंपि घोसणयं घोसेह त्ता खिप्पामेव ममेयं० पच्चप्पिणह, तते णं ते कोडुंबिय जाव पच्च०, तत्थ णं रायगिहे नगरे सुदंसणे नामं सेट्ठी परिवसति अड्ढे०, तते णं से सुदंसणे समणोवासते यावि होत्था अभिगयजीवाजीवे जाव विहरति, तेणं कालेणं० समणे भगवं जाव समोसढे० विहरति, त० रायगिहे नगरे सिंघाडग० बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति जाव किमंग पुण विपुलस्स अट्ठस्स गहणयाए ?, एवं तस्स सुदंसणस्स बहुजणस्स अंतिए एयं सोच्चा निसम्म अयं अब्भत्थिते०-एवं खलु समणे जाव विहरति तं गच्छामि णं वंदामि०, एवं संपेहेति त्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छति त्ता करयल० एवं व०-एवं खलु अम्मताओ ! समणे जाव विहरति तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमं० जाव पज्जुवासामि, तते णं सुदंसणं अम्मापियरो एवं व०-एवं खलु पुत्ता ! अज्जुणे मालागारे जाव घातेमाणे विहरति मा णं तुमं पुत्ता ! समणं भगवं महावीरं वंदए णिग्गच्छाहि. माणं सरीरयस्स तुज्झं वावत्ती भविस्सति, तुमण्णं इहगते चेव समणं भगवं महावीरं वंदाहि णमंसाहि, तते णं सुदंसणे सेट्ठी अम्मापियरं एवं व०-किण्णं अम्मयातो ! समणं भगवं०

इहमागयं इहपत्तं इहसमोसढं इहगते चेव वंदिस्सामि ?, तं गच्छामि णं अहं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाते समाणे भगवं महा० वंदते, त० सुदंसणं सेट्ठिं अम्मापियरो जाहे नो संचायंति बहूहिं आघवणाहिं० जाव परूवेत्तते ताहे एवं व०-अहासुहं०, त० से सुदंसणे अम्मापितीहिं अब्भणुण्णाते समाणे ण्हाते सुद्धप्पावेसाइं जाव सरीरे सयातो गिहातोपडिनिक्खमति त्ता पायविहारचारेणं रायगिहं णगरं मज्झमज्झेणं णिग्गच्छति त्ता मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणस्स अदूरसामंतेणं जेणेव गुणसिलते चेतिते जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं से मोग्गरपाणी जक्खे सुदंसणं समणोवासतं अदूरसामंतेणं वीतीवयमाणं पा० त्ता आसुरूत्ते०, तं पलसहस्सनिप्फन्नं अयोमयं मोग्गरं उल्लालेमाणे २ जेणेव सुदंसणे समणोवासते तेणेव पहारेत्थ गमणाते, तते णं से सुदंसणे समणोवासते मोग्गरपाणिं जक्खं एज्जमाणं पासति त्ता अभीते अतत्थे अणुव्विग्गे अक्खभिते अचलिए असंभयते वत्थंतेणं भूमीं पमज्जति त्ता करतल० एवं व०-नमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, नमोऽत्थु णं समणस्स जाव संपाविउकामस्स, पुव्विं च णं मते समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए थूलते पाणातिवाते पच्चक्खाते जावज्जीवाते थूलते मुसावाते थूलते अदिन्नादाणे सदारसंतोसे कते जावज्जीवाते इच्छापरिमाणे कते जावज्जीवाते, तं इदाणिंपि तस्सेव अंतियं सव्वं पाणातिवातं पच्चक्खामि जावज्जीवाए मुसावायं अदत्तादाणं मेहुणं परिग्गहं पच्चक्खामि जावज्जीवाए सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, जति णं एत्तो उवसग्गातो मुच्चिस्सामि तो मे कप्पेति पारेत्तते अह णो एत्तो उवसग्गातो मुच्चिस्सामि ततो मे तहा पच्चक्खाते चेवत्तिकट्टु सागारं पडिमं पडिवज्जति, त० से मोग्गरपाणिजक्खे तं पलसहस्सनिप्फन्नं अयोमयं मोग्गरं उल्लालेमाणे २ जेणेव सुदंसणे समणोवासते तेणेव उवा० त्ता नो चेव णं संचाएति सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तते, तते णं से मोग्गरपाणि जक्खे सुदंसणं समणोवासतं सव्वओ समंताओ परिघोलेमाणे २ जाहे नो (चेव णं) संचाएति सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तते ताहे सुदंसणस्स समणोवायसस्स पुरतो सपक्खिं सपडिदिसिं ठिच्चा सुदंसणं समणोवासयं अणिमिसाते दिट्ठीए सुचिरं निरिक्खतिं त्ता अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरं विप्पजहति त्ता तं पलसहस्सनिप्फन्नं अयोमयं मोग्गरं गहाय जामेव दिसं पाउब्भूते तामेव दिसं पडिगते, त० से अज्जुणते माला० मोग्गरपाणिणा जक्खेणं विप्पमुक्के समाणे धसत्ति धरणियलंसि सव्वंगेहिं निवडिते, त० से सुदंसणे समणोवासते निरूवसग्गमितिकट्टु पडिमं पारेति, तते णं से अज्जुणते माला० तत्तो मुहुत्तंतरेणं आसत्थे समाणे उट्ठेति त्ता सुदंसणं समणोवासयं एवं व०-तुब्भे णं देवाणु० ! के कहिं वा संपत्थिया ?, तते णं से सुदंसणे समरोवासते अज्जुणयं माला० एवं व०-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं सुदंसणे नामं समणोवासते अभिगयजीवाजीवे गुणसिलते चेतिते समणं भगवं महावीरं वंदते संपत्थिते, त० से अज्जुणते माला० सुदंसणं समणोवासयं एवं व०-तं इच्छामि णं देवाणु० ! अहमवि तुमए सद्धिं समणं भगवं महावीरं वंदेत्तए जाव पज्जुवासेत्तए, अहासुहं देवाणु० ?, त० सें सुदंसणे समणोवासते अज्झुणएणं मालागारेणं सद्धिं जेणेव गुणसिलए चेतिते जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उ० त्ता अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धि समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासति, तते णं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स समणो० अज्जुणयस्स मालागारसस्स तीसे य० धम्मकहा, सुदंसणे पडिगते, तए णं से अज्जुणते समणस्स० धम्मं सोच्चा हट्ठ० सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं जाव अब्भुट्ठेमि, अहासुहं, त० से अज्जुणते माला० उत्तर० सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति जाव अणगारे जाते जाव विहरति, तते णं से अज्जुणते अणगारे जं चेव दिवसं मुंडे जाव पव्वइते तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदति त्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं उग्गिण्हति-कप्पइ मे जावज्जीवाते छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तएत्तिकट्टु अयमेयारूवं अभिग्गहं ओगेण्हति त्ता जावज्जीवाए जाव विहरति, तते णं से अज्जुणते अणगारे छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमपोरिसीए सज्झायं करेति जहा गोयमसामी जाव अडति, तते णं ते अज्जुणयं अणगारं रायगिहे नगरे उच्च जाव अडमाणं बहवे इत्थीओ य पुरिसा य डहरा य महल्ला य जुवाणा य एवं व०-इमे णं मे पितामारते भाया० भगिणी० भज्जा० पुत्त० धूया० सुण्हा० इमेण मे अन्नतरे सयणसंबंधिपरियणे मारिएत्तिकट्टु अप्पेगतिया अक्कोसंति अप्पे० हीलंति निंदंति खिसंति गरिहंति तज्जेंति तालेंति, तते णं से अज्जुणते अणगारे तेहिं बहूहिं इत्थीहि य पुरिसेहि य डहरेहि

य महल्लेहि य जुवाणएहिं य आतोसेज्जमाणे जाव तालेज्जमाणे तेसिं मणसावि अपउस्समाणे सम्मं सहति सम्मं खमति तितिक्खति अहियासेति सम्मं सहमाणे खमा० तिति० अहि० रायगिहे णगरे उच्चणीयमज्झिमकुलाइ अडमाणे जति भत्तं लहति तो पाणं ण लभति जइ पाणं तो भत्तं न लभति, तते णं से अज्जुणते अदीणे अविमणे अकलुसे अणाइले अविसादी अपरितंतजोगी अडति त्ता रायगिहातो नगरातो पडिनिक्खमति त्ता जेणेव गुणसिलए चेतिते जेणेव समणे भगवं महावीरे जहा गोयमसामी जाव पडिदंसेति त्ता समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाते अमुच्छिते० बिलमिव पण्णगभूतेणं अप्पणेणं वतमाहारं आहारेति, तते णं समणे० अन्नदा राय० पडि० बहिं जण० विहरति, तते णं से अज्जुणते अणगारे तेणं ओरालेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे बहुपुण्णे छम्मासे सामण्णपरियागं पाउणति, अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं झुसेति तीसं भत्ताइ अणसणाते छेदेति त्ता जस्ससट्ठाते कीरति जाव सिद्धे, अ० ३ ।१३। तेणं कालेणं० रायगिहे नगरे गुणसिलए चेतिते तत्थ णं सेणिए राया कासवे णामं गाहावती परिवसति जहा मंकाती. सोलस वासा परियाओ विपुले सिद्धे, अ० ४ । एवं खेमतेऽवि गाहावती, नवरं कागंदी नगरी सोलस परिताओ विपुलपव्वए सिद्धे, अ० ५ । एवं धितिहरेवि गाहा० कागंदीए ण० सोलस वासा परियाओ जाव विपुले सिद्धे, अ० ६ । एवं केलासेवि गा० नवरं सागेए नगरे बारस वासाइं परियाओ विपुले सिद्धे, अ० ७ । एवं हरिचंदणेवि गा० साएए बारस वासा परियाओ विपुले सिद्धे, अ० । एवं वारत्ततेवि गा० नवरं रायगिहे नगरे बारस वासा परियाओ विपुले सिद्धे, अ० ९ । एवं सुदंसणेऽवि गो० नवरं वाणियगामे नयरे दूतिपलासते चेइते पंच वासा परियाओ विपुले सिद्धे, अ० १० । एवं पुन्नभद्देवि गा० वाणियगामे नगरे पंच वासा विपुले सिद्धे, अ० ।११ । एवं सुमणभद्देवि सावत्थीए नग० बहुवासपरि० सिद्धे, अ० १२ । एवं सुपइट्ठेवि गा० सावत्थीए नगरीए सत्तावीसं वासा परि० विपुले सिद्धे, अ० १३ । मेहे रायगिहे नगरे बहूइं वासातिं परिताओ, अ० १४ । तेणं कालेणं० पोलासपुरे नगरे सिरिवरे उज्जाणे. तत्थ णं पोलासपुरे नगरे विजये नामं राया होत्था, तस्स णं विजयस्स रन्नो सिरी नामं देवी होत्था वन्नतो, तस्स णं विजयस्स रन्नो पुत्ते सिरीए देवीते अत्तते अतिमुत्ते नामं कुमारे होत्था सूमाले०, तेणं कालेणं० समणे भगवं महावीरे जाव सिरिवणं० विहरति, तेणं का० समणस्स० जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती जहा पन्नत्तीए जाव पोलासपुरे नगरे उच्चा जाव अडइ, इमं च णं अइमुत्ते कुमारे ण्हाते जाव विभूसित्ते बहूहिं दारएहिं य दारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे सतो गिहातो पडिनिक्खमति त्ता जेणेव इंदट्ठाणे तेणेव उवागते तेहिं बहूहिं दारएहि य संपरिवुडे अभिरममाणे २ विहरति, तते णं भगवं गोयमे पोलासपुरे नगरे उच्चनीय जाव अडमाणे इंदट्ठाणस्स अदूरसामंतेणं वितीवयति, तते णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं अदूरसामंतेणं वीतीवयमाणं पासति जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागते भगवं गोयमं एवं व०-के णं भंते ! तुब्भे किं वा अडइ ?, तते णं भगवं गोयमे अइमुत्तं कुमारं एवं व०-अम्हे णं देवाणुप्पिया ! समणा णिग्गंथा ईरियासमिया जाव बंभयारी उच्चनीय जाव अडामो, तते णं अतिमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं व०-एह णं भंते ! तुब्भे जा णं अहं तुब्भं भिक्खं दवावेमीतिकट्टु भगवं गोयमं अंगुलीए गेण्हति त्ता जेणेव सते० तेणेव उवागते, तते णं सा सिरीदेवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासति त्ता हट्ठ० आसणातो अब्भुट्ठेति त्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागया भगवं गोयमं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं वंदति त्ता विउलेणं असण० पडिविसज्जेति, तते णं से अतिमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं व०-कहिं णं भंते ! तुब्भे परिवसह ?, त० भगव० अइमुत्तं कुमारं एवं व०-खलु देवाणुप्पिया ! मम धम्मायरिए धम्मोवतेसते समणे भगवं महावीरे आदिकरे जाव संपाविउकामे इहेव पोलासपुरस्स नगरस्स बहिया सिरिवणे उज्जाणे अहापडि० उग्गहं० संजमेणं जाव भावेमाणे विहरति तत्थ णं अम्हे परिवसामो, तते णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं व०-गच्छामि णं भंते ! अहं तुब्भेहिं सद्धिं समणं भगवं महावीरं पायवंदते ?, अहासुहं०, तते णं से अतिमुत्ते कुमारे भगवया गोतमेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवा० त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति त्ता वंदति जाव पज्जुवासति, तते णं भगवं गोयमे जेणेव समणे भगवं महावीरें तेणेव उवागते जाव पडिदंसेति त्ता संजमे० तव० विहरति, त० समणे० अतिमुत्तस्स कुमारस्स तीसे य धम्मकहा, त० से अतिमुत्ते समणस्स भ० म० अ० धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ० जं नवरं देवाणु० ! अम्मापियरो

आपुच्छामि तते णं अहं देवाणु० ! अंतिए जाव पव्वयामि, अहा० देवाणु० मा पडिबंध०, तते णं से अतिमुत्ते जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागते जाव पव्वतित्तए, अतिमुत्तं कुमारं अम्मापितरो एवं व०-बाले सि ताव तुमं पुत्ता ! असंबुद्धे सि० किं णं तुमं जाणसि धम्मं ?, तते णं से अतिमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एवं व०-एवं खलु अम्मयातो ! जं चेव जाणामि तं चेव न याणामि जं चेव न याणामि तं चेव जाणामि, त० तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो एवं व०-कहं णं तुमं पुत्ता ! जं चेव जाणसि जाव तं चेव जाणसि ?, त० से अतिमुत्ते कुमारे अम्मापितरो एवं०-जाणामि अहं अम्मतातो ! जहा जाएणं अवस्समरियव्वं न जाणामि अहं अम्मतातो ! काहे वा कहिं वा कहं वा केचिरेणं वा ?. न जाणामि अम्मयातो ! केहिं कम्मायाणेहिं जीवा नेरइयतिरिक्खजोणियमणुस्सदेवेसु उववज्जंति, जाणामि णं अम्मयातो ! जहा सतेहिं कम्मायाणेहिं जीवा नेरइय जाव उववज्जंति, एवं खलु अहं अम्मतातो ! जं चेव जाणामि तं चेव न याणामि जं चेव न याणामि तं चेव जाणामि, इच्छामि णं अम्मतातो ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाते जाव पव्वइत्तते, तते णं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं आघव० तं इच्छामो ते जाता ! एगदिवसमवि रातसिरिं पासेत्तते, त० से अतिमुत्ते कुमारे अम्मापिउवयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठति अभिसेओ जहा महाबलस्स निक्खमणं जाव सामाइयमाइयाइं अहिज्जति बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं गुणरयणं जाव विपुले सिद्धे, अ० १५ । तेणं कालेणं० वाणारसीए नयरीए काममहावणे चेतिते, तत्थ णं वाणारसीइ अलक्खे णामं राया होत्था, तेणं कालेणं० समणे जाव विहरति परिसा०, तते णं अलक्खे राया इमीसे कहाते लद्धट्ठे हट्ठ जहा कूणिए जाव पज्जुवासति धम्मकहा, त० से अलक्खे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स जहा उदायणे तहा णिक्खंते णवरं जेट्ठपुत्तं रज्जे अहिसिंचति एक्कारस अंगा बहू वासा परियाओ जाव विपुले सिद्धे, अ० १६ । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव छट्ठस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते ।१५॥ वग्गो ६ ॥ जति णं भंते ![**सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव तेरस अज्झयणा**] पं०- 'नंदा तहा नंदमती नंदोत्तर नंदसेणिया चेव । महया सुमरूत महमरुय, मरुदेवा य अट्ठमा ॥ ८ ॥ भद्दा सुभद्दा य, सुजाता सुमणातिया । भूयदित्ता य बोद्धव्वा, सेणियभज्जाण नामाइं ॥९ ॥ जइ णं भंते !० तेरस अज्झयणा पन्नत्ता पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं० के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं का० रायगिहे गुणसिलते चेतिते सेणिते राया वन्नतो, तस्स णं सेणियस्स रण्णो नंदा नामं देवी होत्था वन्नओ, सामी समोसढे परिसा निग्गता, तते णं सा नंदादेवी इमीसे कहाते लद्धट्ठा कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति त्ता जा णं पउमावती जाव एक्कारस अंगाइ अहिज्जत्ता वीसं वासाइं परियातो जाव सिद्धा, अ० १ । एवं तेरसवि देवीओ णंदागमेण णेयव्वातो, अ० १३ ॥ वग्गो ७ । १६ । जति णं भंते ![**अट्ठमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव दस अज्झयणा**] पं० तं०- 'काली सुकाली महाकाली कण्हा सुकण्हा महाकण्हा । वीरकण्हा य बोद्धव्वा. रामकण्हा तहेव य ।१० ॥ पिउसेणकण्हा नवमी दसमी महासेणकण्हा य ॥ जति० दस अज्झयणा० पढमस्स अज्झयणस्स के अट्ठे पं० ?, एवं खलु जंबू ! तेणं का० चंपा नाम नगरी होत्था पुन्नभद्दे चेतिते, तत्थ णं चंपाए नयरीए कोणिए राया वण्णतो, तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया काली नाम देवी होत्था वण्णतो, जहा नंदा जाव सामातियमातियातिं एक्कारस अंगाइ अहिज्जति बहूहिं चउत्थ० जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरति, तते णं सा काली अण्णया कदाई जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागता त्ता एवं व०- इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाता समाणा रयणावलिं तवं उवसंपज्जेत्ताणं विहरेत्तते, अहासुहं०, त० सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णाया समाणा रयणावलिं उवसंप० विहरति तं०- चउत्थं करेति त्ता सव्वकामगुणियं पारेति (प्र० पढमंमि सव्वकामगुणियं) पारेत्ता छट्ठं करेति त्ता सव्वकाम० पारेति त्ता अट्ठमं करेति त्ता सव्वकाम० त्ता अट्ठ छट्ठाइं करेति त्ता सव्वकामगुणियं पारेति त्ता चउत्थं० सव्वकामगुणियं पारेति त्ता छट्ठं करेति त्ता सव्वकामगुणियं पारेति त्ता अट्ठमं करेति त्ता सव्वकामगु० दसमं० सव्वकाम० दुवालसमं० सव्वकाम० चोद्दसमं० सव्वकाम० सोलसमं० सव्वकामगु० अट्ठररसमं० सव्वकाम० वरसइमं० सव्वकामगु० बावीसइमं० सव्वकाम० चउवीसइमं सव्वकागुम० उव्वीसइ० सव्वकाम० अट्ठावीस० सव्वकाम० तीसइमं० सव्वकाम० बत्तीसइमं० सव्वकाम० चोत्तीसइमं० सव्वकाम० चोत्तीसं छट्ठाइं० सव्वकागुम०

चोत्तीसइमं० सव्वकाम० बत्तीस० सव्वकाम० तीस० सव्वकाम० अट्ठावीस० सव्वकाम० छव्वीस० सव्वकाम० चउवीस० सव्वकाम० बावीस० सव्वकाम० वीस० सव्वकाम० अट्ठारसमं० सव्वकाम० सोलसमं० सव्वकाम० चोद्दसमं० सव्वकाम० बारसमं० सव्वकाम० दसमं० सव्वकाम० अट्ठम० सव्वकाम० छट्ठं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० अट्ठ छट्ठाइं० सव्वकाम० अट्ठमं० सव्वकाम० छट्ठं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० एवं खलु एसा रयणावलीए तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी एगेणं संवच्छरेणं तीहिं मासेहिं बावीसाए य अहोरत्तेहिं अहासुत्ता जाव आराहिया भवति, तदाणंतरं च णं दोच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेति विगतिवज्जं पारेति त्ता छट्ठं करेति त्ता विगतिवज्जं पारेति एवं जहा पढमाएवि नवरं सव्वपारणते विगतिवज्जं पारेति जाव आराहिया भवति, तयाणंतरं च णं तच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेति त्ता अलेवाडं पारेति सेसं तहेव, एवं चउत्था परिवाडी नवरं सव्वपारणते आयंबिलं पारेति सेसं तं चेव,- 'पढमंमि सव्वकामं पारणयं बितियते विगतिवज्जं। ततियंमि अलेवाडं आयंबिलमो चउत्थंमि॥ ११ ॥ तते णं सा काली अज्जा रयणवलीतवोकम्मं पंचहिं संवच्छरेहिं दोहि य मासेहिं अट्ठावीसाए य दिवसेहिं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवा० त्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदति णमंसति त्ता बहूहिं चउत्थ जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरति, तते णं सा काली अज्जा तेणं ओरालेणं जाव धमणिसंतया जाया यावि होत्था, से जहा इंगाल० सहुयहुयासणे इव भासरासिपलिच्छण्णा तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अतीव उवसोभेमाणी चिट्ठति, तते णं तीसे कालीए अज्जाए अन्नदा कदाई पुव्वरत्तावरत्तकाले अयं अब्भत्थिते जहा खंदयस्स चिंता जाव अत्थि उट्ठा० तावताव मे सेयं कल्लं० जाव जलंते अज्जचंदणं अज्जं आपुच्छित्ता अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भणुन्नायाए समाणीए संलेहणाझूसणा० भत्तपाणपडि० कालं अणवकंख० विहरेत्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति त्ता कल्लं० जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उ० त्ता अज्जचंदणं वंदति णमंसति त्ता एवं व०- इच्छामि णं अज्जा! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाता समाणी संलेह० जाव विहरेत्तते, अहासुहं०, काली अज्जा अज्जचंदणाते अब्भणुण्णाता समाणी संलेहणाझूसिया जाव विहरति, सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अंतिते सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुन्नाइं अट्ठ संवच्छराइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता सट्ठिं भत्तातिं अणसणाते छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरति जाव चरिमुस्सासनीसासेहिं सिद्धा०। णिक्खेवो, अ० १। १७। तेणं का० चंपानामं नगरी पुन्नभद्दे चेतिते कोणिए राया, तत्थ णं सेणियस्स रण्णो भज्जा कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया सुकालीनाम देवी होत्था, जहा काली तहा सुकालीवि णिक्खंता जाव बहूहिं चउत्थ जाव भावे० विहरति, त० सा सुकाली अज्जा अन्नया कयाई जेणेव अज्जचंदणा अज्जा जाव इच्छामि णं अज्जो! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाता समाणी कणगावलीतवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरेत्तते, एवं जहा रयणावली तहा कणगावलीवि, नवरं तिसु ठाणेसु अट्ठमाइं करेति जहा रयणावलीए छट्ठाइं, एक्काए परिवाडीए संवच्छरो पंच मासा बारस य अहोरत्ता, चउण्हं पंच वरिसा नव मासा अट्ठारस दिवसा सेसं तहेव, नव वासा परियातो जाव सिद्धा, अ० २। १८। एवं महाकालीवि, नवरं खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तं०- चउत्थं करेति त्ता सव्वकामगुणियं पारेति त्ता छट्ठं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० अट्ठम० सव्वकाम० छट्ठं० सव्वकाम० दसमं० सव्वकाम० अट्ठमं० सव्वकाम० दुवालसं० सव्वकाम० दसमं० सव्वकाम० चोद्दसं० सव्वकाम० बारसमं० सव्वकाम० सोलस० सव्वकाम० चोद्दसं० सव्वकाम० अट्ठारसं० सव्वकाम० सोलसमं० सव्वकाम० वीस० सव्वकाम० अट्ठार० सव्वकाम० वीसइ० सव्वकाम० सोलसमं सव्वकाम० अट्ठार० सव्वकाम० चोद्दस० सव्वकाम० सोलस० सव्वकाम० बारस० सव्वकाम० चोद्दस० सव्व० दसमं० सव्वका० बारसमं० सव्वकाम० अट्ठमं० सव्वकाम० दसमं० सव्वकाम० छट्ठं० सव्वकाम० अट्ठमं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० छट्ठं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० तहेव चत्तारि परिवाडीओ, एक्काए परिवाडीए छम्मासा सत्त य दिवसा, चउण्हं दो वरिसा अट्ठावीसा य दिवसा जाव सिद्धा, अ० ३। १९। एवं कण्हावि नवरं महालयं सीहणिक्कीलियं तवोकम्मं जहेव खुड्डागं नवरं चोत्तीसइमं जाव णेयव्वं तहेव ऊसारेयव्वं, एक्काए वरिसं छम्मासा अट्ठारस य दिवसा, चउण्हं छव्वरिसा दो मासा बारस य अहोरत्ता, सेसं जहा कालीए जाव सिद्धा, अ० ४। २०। एवं सुकण्हावि णवरं सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, पढमे सत्तए एक्केक्कं भोयणस्स (१२८) दत्तिं पडिगाहेति एक्केक्कं पाणयस्स दोच्चे

सत्तए दो दो भोयणस्स दो दो पाणयस्स पडिगाहेति तच्चे सत्तते तिन्नि भोयणस्स तिन्नि पाणयस्स च० छ० सत्तमे सत्तते सत्त दत्तीतो भोयणस्स पडिग्गाहेति सत्त पाणयस्स, एवं खलु एयं सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं एगूणपन्नाते रातिंदिएहिं एगेण य छन्नउएणं भिक्खासतेणं अहासुत्ता जाव आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया अज्जचंदण अज्जं व० न० त्ता एवं वं०- इच्छामि णं अज्जातो ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाता समाणी अट्ठट्ठमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरेत्तते, अहासुहं०, तते णं सा सुकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णाया समाणी अट्ठट्ठमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, पढमे अट्ठए एक्केक्कं भोयणस्स दत्तिं पडि० एक्केक्कं पाणगस्स जाव अट्ठमे अट्ठए अट्ठ भोयणस्स पडिगाहेति अट्ठ पाणगस्स. एवं खलु एयं अट्ठट्ठमियं भिक्खुपडिमं चउसट्ठीए रातिंदिएहिं दोहि य अट्ठसीतेहिं भिक्खासतेहिं अहा जाव नवनवमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, पढमे नवए एक्केक्कं भोयणस्स दत्तिं पडि० एक्केक्कं पाणयस्स जाव नवमे नवए नव नव द० भो० पडि० नव नव पाणयस्स, एवं खलु नवनवमियं भिक्खुपडिमं एकासीतीराइंदिएहिं चउहिं पंचोत्तरेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्ता०, दसदसमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, पढमे दसते एक्केक्कं भोय० पडि० एक्केक्कं पाण० जाव दसमे दसए दस दस भो० दत्ती पहिग्गाहेइ दस दस पाणस्स०, एवं खलु एयं दसदसमियं भिक्खुपडिमं एक्केणं राइंदियसतेणं अद्धछट्ठेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं जाव आराहेति त्ता बहूहिं चउत्थजावमाससद्धमासविविहतवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरति, तए णं सा सुकण्हा अज्जा तेणं ओरालेणं जाव सिद्धा० । अ०५, निक्खेवो ।२१। एवं महाकण्हावि णवरं खुड्डागं सव्वओभद्दं पडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, चउत्थं करेति त्ता सव्वकामगुणियं पारेति त्ता छट्ठं० सव्वकाम० अट्ठमं० सव्वकाम० दसमं० सव्वकाम० दुवालसमं० सव्वकाम० अट्ठमं० सव्वकाम० दसमं० सव्वकाम० दुवाल० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० छट्ठं० सव्वकाम० दुवालस० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० छट्ठं० सव्वकाम० अट्ठमं० सव्वकाम० दसमं० सव्वकाम० छट्ठं० सव्वकाम० अट्ठमं० सव्वकाम० दसमं० सव्वकाम० दुवालसमं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० दसमं० सव्वकाम० दुवाल० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० छट्ठं० सव्वकाम० अट्ठमं० सव्वकाम० एवं खलु एवं खुड्डागसव्वतोभद्दस्स तवोकम्मस्स पढमं परिवाडिं तिहिं मासेहिं दसहिं दिवसेहिं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता दोच्चाए परिवाडीए चउत्थं० विगतिवज्जं० जहा रयणावलीए तहाएत्थवि चत्तारि परिवाडीतो पारणा तहेव, चउण्हं कालो संवच्छरो एक्को मासो दस य दिवसा सेसं तहेव जाव सिद्धा० । निक्खेवो अ० ६ । २२ । एवं वीरकण्हावि नवरं महालयं सव्वतोभद्दं तवोकम्मं उवसंप० विहरति, तं०- चउत्थं० सव्वकामगुणियं० छट्ठं० सव्वकाम० अट्ठमं० सव्वकाम० दसमं० सव्वकाम० दुवालसमं० सव्वकाम० चोद्दस० सव्वकाम० सोलसमं० सव्वकाम० दसमं० सव्वकाम० दुवाल० सव्वकाम० चउदसं० सव्वकाम० सोलसं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० छट्ठं० सव्वकाम० अट्ठमं० सव्वकाम० सोलसं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० छट्ठं० सव्वकाम० अट्ठमं० सव्वकाम० दसमं० सव्वकाम० दुवाल० सव्वकाम० चोद्दस० सव्वकाम० अट्ठमं० सव्वकाम० दसमं० सव्वकाम० दुवालसं सव्वकाम० चोद्दसमं० सव्वकाम० सोलसमं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० छट्ठं० सव्वकाम० चोद्दस० सव्वकाम० सोलसमं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० छट्ठं० अट्ठमं० सव्वकाम० दसमं० दुवाल० सव्वकाम० छट्ठं० सव्वकाम० अट्ठमं० सव्वकाम० दसमं० सव्वकाम० सव्व० दुवाल० चोद्दसमं० सव्वकाम० सोलसमं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० दुवाल० सव्वकाम० चोद्दसमं० सव्वकाम० सोलसमं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० छट्ठं० सव्वकाम० अट्ठमं० सव्वकाम० दसमं० एक्केक्काए लयाए अट्ठ मासा पंच य दिवसा चउण्हं दो वासा अट्ठ मासा वीसं दिवसा सेसं तहेव जाव सिद्धा०, अ०७। २३। एवं रामकण्हावि नवरं भद्दोत्तरपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तं०- दुवालसमं० सव्वकाम० चोद्दसमं० सव्वकाम० सोलसमं० सव्वकाम० अट्ठार० सव्वकाम० वीसइमं० सव्वकाम० सोलसमं० सव्वकाम० अट्ठार० सव्वकाम० वीसइमं० सव्वकाम० दुवालसमं० सव्वकाम० चोद्दसमं० सव्वकाम० वीसतिमं० सव्वकाम० दुवालसं० सव्वकाम० चोद्दसमं० सव्वकाम० सोलसमं० सव्वकाम० अट्ठारसं० सव्वकाम० चोद्दसमं० सव्वकाम० सोलसमं० सव्वकाम० अट्ठारसमं० सव्वकाम० वीसइमं० सव्वकाम० दुवालसमं० सव्वकाम० अट्ठारसमं० सव्वकाम० वीसतिमं० सव्वकाम० दुवालसमं० सव्वकाम० चोद्दसमं० सव्वकाम० सोलसमं, एक्काये० कालो छम्मासा वीस

य दिवसा, चउण्हं कालो दो वरिसा दो मासा वीस य दिवसा, सेसं तहेव जहा काली जाव सिद्धा, अ० ८। २४। एवं पितुसेणकण्हावि नवरं मुत्तावलीतवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति० तं०- चउत्थं० सव्व० छट्ठं० सव्व० चउत्थं० सव्वकाम० अट्ठमं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० दसमं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० दुवाल० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० चोद्दसमं० सव्वकाम० सोलसमं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० अट्ठारसं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० वीसतिमं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० बावीसइमं० सव्वकाम० छव्वीसइमं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० अट्ठावीसं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० तीसइमं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० बत्तीसइमं० सव्वकाम० चउत्थं० सव्वकाम० चोत्तीसइमं० एवं तहेव ओसारेति जाव चउत्थं करेति त्ता सव्वकामगणियं पारेति, एक्काए० कालो एक्कारस मासा पनरस य दिवसा चउण्हं तिण्णि वरिसा दस य मासा सेसं जाव सिद्धा, अ० ९। २५। एवं महासेणकण्हावि, नवरं आयंबिलवड्ढमाणं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तं०- आयंबिलं करेति० चउत्थं० बे आयंबिलाइं० चउत्थं० तिन्नि आयंबिलाइं० चउत्थं० चत्तारि आयंबिलाइं० चउत्थं० पंच आयंबिलाइं० चउत्थं० छ आयंबिलाइं० चउत्थं० एवं एकोत्तरियाए वड्ढीए आयंबिलाइं वड्ढंति चउत्थंतरियाइं जाव आयंबिलसयं० चउत्थं०, तते णं सा महासेणकण्हा अज्जा आयंबिलवड्ढमाणं तवोकम्मं चोद्दसहिं वासेहिं तीरि य मासेहिं वीसहि य अहोरत्तेहिं अहासुत्तं जाव सम्मं काएणं फासेति जाव आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवा० वं० न० त्ता बहूहिं चउत्थ जाव भावेमाणी विहरति, तते णं सा महासेणकण्हा अज्जा तेणं ओरालेणं जाव उवसोभेमाणी चिट्ठइ, तए णं तीसे महासेणकण्हाए अज्जाए अन्नया कयाई पुव्वत्तावरत्तकाले चिंता जहा खंदयस्स जाव अज्जचंदणं पुच्छइ जाव संलेहणा, कालं अणवकंखमाणी विहरति, त० सा महासेणकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अं० सामाइयाइयातिं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुन्नातिं सत्तरस वासातिं परियायं पालइत्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ जाव तमट्ठं आराहेति चरिमउस्सासणीसासेहिं सिद्धा वुद्धा०। 'अट्ठ य वासा आदी एक्कोत्तरियाए जाव सत्तरस। एसो खलु परिताओ सेणियभज्जाण णायव्वो॥ १२॥ एवं खलु जंबू! समणेणं भगवत्ता महावीरेणं आदिगरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अयमट्ठे पं०। २६। **卐卐卐। अन्तगडदसांगं समत्तं। 卐卐卐** अंतगडदसाणं अंगस्स एगो सुयखंधो अट्ठ वग्गा अट्ठसु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति, तत्थ पढमबितियवग्गे दस दस उद्देसगा तइयवग्गे तेरस उद्देसगा चउत्थपंचमवग्गे दस दस उद्देसया छट्ठवग्गे सोलस उद्देसगा सत्तमवग्गे तेरस उद्देसगा अट्ठमवग्गे दस उद्देसगा सेसं जहा नायाधम्मकहाणं।२७।